नई भूगोल पुस्तक-माला

र स्कूलों के लिए

सरी पुस्तक

76२

R
54
ЧМД

का प्रारम्भिक भूगोल

युक्त प्रदेश के वर्नाक्युलर स्कूलों की
पाँचवीं कक्षा के लिए



प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लि

भद्रशीला देवी

इंडियन प्रेस, लि०, की नई भूगोल पुस्तक-माला

वर्नाक्युलर स्कूलों के लिए

762

दूसरी पुस्तक

R 54 IND-D

हिन्दुस्तान का प्रारम्भिक भूगोल

संयुक्त प्रदेश के वर्नाक्युलर स्कूलों की
पाँचवीं कक्षा के लिए



प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि





हिन्दुस्तान का प्रारम्भिक भूगोल

प्रसिद्ध भूगोल-शास्त्रज्ञ ए० जे० हरबार्टसन का यह सिद्धान्त है कि भूगोल की पुस्तकों में यथासम्भव ऐसे स्थानों के नाम न लिखे जायँ जिनके बिना काम चल सकता हो और केवल उन स्थानों के नाम लिखने के लिए चुने जायें जिनके लिए भूगोल-सम्बन्धी कोई विशेष कारण हो।

वर्नाक्युलर स्कूलों के लिए

इंडियन प्रेस की नई भूगोल-पुस्तक-माला।

दूसरी पुस्तक

हिन्दुस्तान का प्रारम्भिक भूगोल

संयुक्त प्रदेश के वर्नाक्युलर स्कूलों की
पाँचवीं कक्षा के लिए

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

१९२५

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
Bishweshwar Prasad,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

भूमिका

देखा गया है कि हिन्दुस्तान के स्कूलों की पढ़ाई में एक बड़ा दोष यह है कि लड़कों को जितनी बातें जाननी चाहिए उससे अधिक सिखाई जाती हैं। इससे विशेष करके भूगोल की शिक्षा को बड़ी हानि पहुँचती है। बहुत सी बातें बताने की धुन में शिक्षक उसके कार्य तथा कारणों पर यथोचित ध्यान नहीं देते हैं। इसका यह फल होता है कि विद्यार्थी भूगोल की बातों को बिना समझे रट लेते हैं और वह बातें शीघ्र ही भूल जाती हैं। इस बात को दूर करने के लिए भूगोल की इस पुस्तकमाला में केवल मुख्य मुख्य बातें बताई गई हैं और कार्य तथा कारणों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

सूचीपत्र

हिन्दुस्तान का प्रारम्भिक भूगोल

—०—

पहला अध्याय

पृथ्वी का आकार, विस्तार और धरातल

पृथ्वी का चपटापन—जो लड़के हिन्दुस्तान के मैदानों में रहते हैं, वह समझते हैं कि पृथ्वी चपटी है। परन्तु पृथ्वी वास्तव में चपटी नहीं है बरन् नारङ्गी अथवा गेंद के सदृश गोल है। चपटी प्रतीत होने का कारण यह है, कि हम पृथ्वी की अपेक्षा इतने छोटे हैं, कि हमें एक समय में इसका बहुत ही थोड़ा भाग दिखाई देता है। यदि किसी गेंद पर कोई चिउँटी चल रही हो, तो उसे गेंद का धरातल चपटा मालूम होगा, क्योंकि चिउँटी को गेंद के धरातल का केवल थोड़ा सा भाग दिखाई देगा। यदि कोई मनुष्य पृथ्वी से हज़ारों मील

ऊपर आकाश में चला जाय, और पृथ्वी को देखे तो उसे पृथ्वी का ऐसा आकार दिखाई देगा जैसा इस चित्र में बना है।



पृथ्वी नारङ्गी के सदृश गोल है—पृथ्वी के गोल होने के कई प्रमाण हैं। एक प्रमाण यह है कि बहुत से मनुष्यों ने पृथ्वी के चारों ओर यात्रा की है। वह अपने देशों से चले, और कई महीने तक एक ही दिशा में यात्रा करते रहे, और अन्त में वहीं लौटकर आ गये जहाँ से चले थे। यदि पृथ्वी चपटी होती, तो वह कहीं न कहीं उसके किनारे पर पहुँच जाते।

गोला और गोलार्द्ध—तुमको अध्यापक पृथ्वी का एक नमूना अर्थात् गोला दिखायेंगे। यह आकृति में गेंद के सदृश है। गेंद के सदृश आकृति की किसी वस्तु को गोला कहते हैं, इसलिए इस नमूने को **पृथ्वी का गोला** कहते हैं। यदि गोले को दो तुल्य भागों में काटें तो प्रत्येक भाग को **गोलार्द्ध** कहेंगे।

ध्रुव और भूमध्यरेखा—ठीक ठीक नापने से सिद्ध हुआ है, कि पृथ्वी नारंगी के सदृश आमने-सामने के सिरों पर थोड़ी सी चपटी है। इन दोनों सिरों को **ध्रुव** कहते हैं। एक **उत्तरी ध्रुव** कहलाता है और दूसरा **दक्षिणी ध्रुव**। अध्यापक तुमको पृथ्वी के गोले पर दोनों ध्रुवों की स्थिति दिखायेंगे। ध्रुवों से बराबर दूरी पर, पृथ्वी के गोले के चारों ओर, जो कल्पित रेखा खिंची हुई है उसे **भूमध्यरेखा** कहते हैं।

पृथ्वी की परिधि और व्यास—जो रेखा गोले के केन्द्र में से होकर एक ओर से दूसरी ओर तक खींची जाय उसे **व्यास** कहते हैं; पृथ्वी का व्यास कुछ कम ८,००० मील है। जो रेखा ध्रुवों में से होकर पृथ्वी के चारों ओर खींची जाय उसे **परिधि** कहते हैं; पृथ्वी की परिधि कुछ कम २५,००० मील है। यदि पृथ्वी के चारों ओर स्थल पर एक रेल की सड़क हो, और एक डाकगाड़ी ३० मील प्रति घंटा की चाल से दिन-रात चले तो वह चौंतीस दिन में अपनी यात्रा समाप्त कर लेगी।

स्थल और जल—पृथ्वी के कुछ भाग में स्थल है, और

कुछ भाग में जल । स्थल धरातल के प्रायः चौथाई भाग में और जल शेष तीन-चौथाई में फैला हुआ है । स्थल पृथ्वी के कुल धरातल पर समान रूप से फैला हुआ नहीं है, वरन् कहीं अधिक है, कहीं कम ।

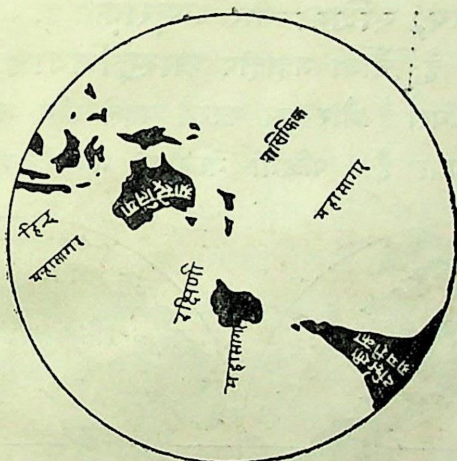


स्थल-गोलार्द्ध ।

अध्यापक तुमको पृथ्वी के गोले का वह आधा भाग दिखायेंगे, जिसमें जल की अपेक्षा स्थल अधिक है । गोले के इस आधे भाग को **स्थल-गोलार्द्ध** कहते हैं ।

अब अध्यापक गोले को घुमाकर तुमको सामने का आधा भाग

दिखायेंगे, इस आधे भाग में जल की अपेक्षा स्थल बहुत कम है, इसको **जल-गोलार्द्ध** कहते हैं ।

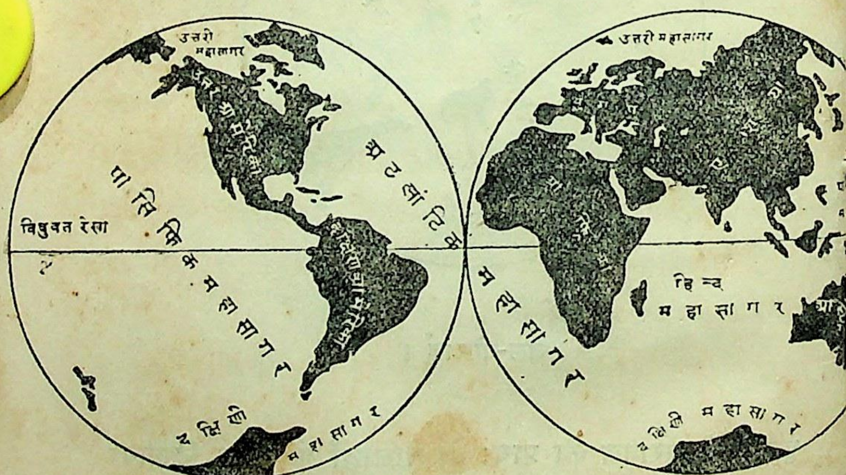


जल-गोलार्द्ध ।

पृथ्वी के धरातल को प्रायः दो गोलार्द्धों के द्वारा दिखाया करते हैं,—उनको **पूर्वी गोलार्द्ध** और **पश्चिमी गोलार्द्ध** कहते हैं । (देखो अगला पृष्ठ)

इन गोलार्द्धों के यह नाम इँगलिस्तान और उसके निकट के देशों के नक़शे बनानेवालों और मल्लाहों ने रक्खे थे, क्योंकि पूर्वी गोलार्द्ध के स्थल का एक बड़ा भाग इँगलिस्तान-निवासियों के पूर्व में है, और पश्चिमी गोलार्द्ध का स्थल इनके पश्चिम में है ।

इस नक़शे के देखने से तुमको विदित हो जायगा, कि हम पृथ्वी के स्थल को पाँच बड़े खण्डों में विभक्त कर सकते हैं; प्रत्येक खण्ड को **महाद्वीप** कहते हैं । पूर्वी गोलार्द्ध में तीन महाद्वीप **योरप, एशिया** और **अफ्रीका** हैं, जो एक-दूसरे से मिले हुए हैं; चौथा महाद्वीप **आस्ट्रेलिया** है, जो चारों ओर जल से घिरा है और इस कारण पहले तीन महाद्वीपों से अलग हो गया है । पश्चिमी गोलार्द्ध में पाँचवाँ महाद्वीप



अमेरिका है जिसके दो खण्ड हैं, **उत्तरी अमेरिका** और **दक्षिणी अमेरिका** ।

पृथ्वी के शेष धरातल पर **महासागर** का जल फैला हुआ है, जो सब महाद्वीपों को घेरे हुए है । महासागर वास्तव में एक ही है, परन्तु भिन्न-भिन्न स्थानों में इसके भिन्न-भिन्न नाम हैं । जल का वह लम्बा भाग जिसके एक ओर अमेरिका और दूसरी

ओर योरप और अफ़रीक़ा है **एटलैन्टिक महासागर** कहलाता है। जल का वह चौड़ा खण्ड जिसके एक ओर अमेरिका, दूसरी ओर एशिया और आस्ट्रेलिया हैं, **पैसिफ़िक महासागर** कहलाता है; और जो तीसरा महासागर एशिया के दक्षिण में और अफ़रीका और आस्ट्रेलिया के बीच में वर्तमान है, उसे **हिन्द महासागर** कहते हैं। दो महासागर और हैं। एक को **उत्तरी महासागर** कहते हैं, जो उत्तरी ध्रुव के चारों ओर फैला है, और जिसमें योरप, एशिया और उत्तरी अमेरिका के उत्तरी तट हैं। दूसरा महासागर दक्षिणी ध्रुव के समीपस्थ देश को घेरे हुए है; इसे **दक्षिणी महासागर** कहते हैं। जिन देशों में यह दोनों महासागर हैं, वहाँ इतनी सरदी पड़ती है, कि दोनों महासागर कई महीनों तक जमे रहते हैं, और इनमें जहाज़ बहुत दूर तक नहीं जा सकते। यही कारण है, कि इन महासागरों का बहुत कम वृत्तान्त मालूम हुआ है।

प्रश्नावली

१—पृथ्वी के गेंद की भांति गोल होने का क्या प्रमाण है ?

२—हमें पृथ्वी चपटी क्यों दिखाई देती है ?

३—स्थल-गोलार्द्ध, भूमध्यरेखा, और दक्षिणी ध्रुव से क्या अभिप्राय है ?

४—यदि तुम भूमध्यरेखा के गिर्द प्रति दिन १० मील चलो, और रात को आराम करो, तो बताओ तुम अपनी यात्रा कितने दिन में समाप्त करोगे ?

५—पृथ्वी के पांच महाद्वीपों और पांच महासागरों के नाम बताओ।

अभ्यास

१—पृथ्वी का गोला या नक़शा देखकर बताओ, कि यदि तुम कलकत्ते से पूर्व की ओर चलकर दुनिया के गिर्द यात्रा करो, तो तुम्हारे मार्ग में कौन-कौन से महासागर और महाद्वीप पड़ेंगे ।

२—दुनिया (१) के ख़ाके में महाद्वीपों और महासागरों के नाम लिखो ।

३—नक़शे में देखकर बताओ, कि हिन्दुस्तान किन-किन महाद्वीपों के साथ सुगमता से व्यापार कर सकता है ।

(१) नोट—विद्यार्थियों के पास नक़शों के ख़ाके होने चाहिएँ; यदि न हों तो इस पुस्तक के नक़शों के ख़ाके उतार लिये जायँ ।

———


चीन का राज्य
रूस का राज्य
तिब्बत
क्राक्रम पर्वत
हिन्दकुश पर्वत
हिमालय पर्वत
नेपाल
भूटान
पटकोई पर्वत
बरमा
अफ़गानिस्तान
सुलेमान पर्वत
किरथार पर्वत
फ़ारिस
फ़ारिस उपसागर
हिन्दुस्तान
कच्छ उपसागर
खम्बायत उपसागर
बंगाल उपसागर
नीग्रेस अन्तरीप
अरब सागर
अरब
स्वेज़ भू डमरूमध्य
रक्तसागर
पाक जलडमरूमध्य
कुमारी अन्तरीप
लंका
मलाया

दूसरा अध्याय

हिन्दुस्तान की स्थिति तथा उत्तरी सीमा

पृथ्वी के गोले या दुनिया के नक़शे में एशिया को देखो तो तुमको मालूम होगा कि इसके दक्षिण में तीन **प्रायद्वीप** हैं। यह स्थल के ऐसे भाग हैं जो समुद्र में दूर तक चले गये हैं और तीन ओर जल से घिरे हुए हैं। यह प्रायद्वीप पश्चिम में **अरब**, पूर्व में **मलाया प्रायद्वीप** और मध्य में **हिन्दुस्तान** के नाम से प्रसिद्ध हैं।

सामने के नक़शे में हिन्दुस्तान का राज्य लाल रंग से दिखाया गया है। यह राज्य विशाल ब्रिटिश-साम्राज्य का एक भाग है। तुमको ब्रिटिश-साम्राज्य के और बड़े-बड़े भाग ब्रिटिश द्वीपसमूह, कैनाडा, दक्षिणी अफ़रीक़ा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड को तुम्हारे अध्यापक पृथ्वी के गोले या दुनिया के नक़शे पर दिखायेंगे।

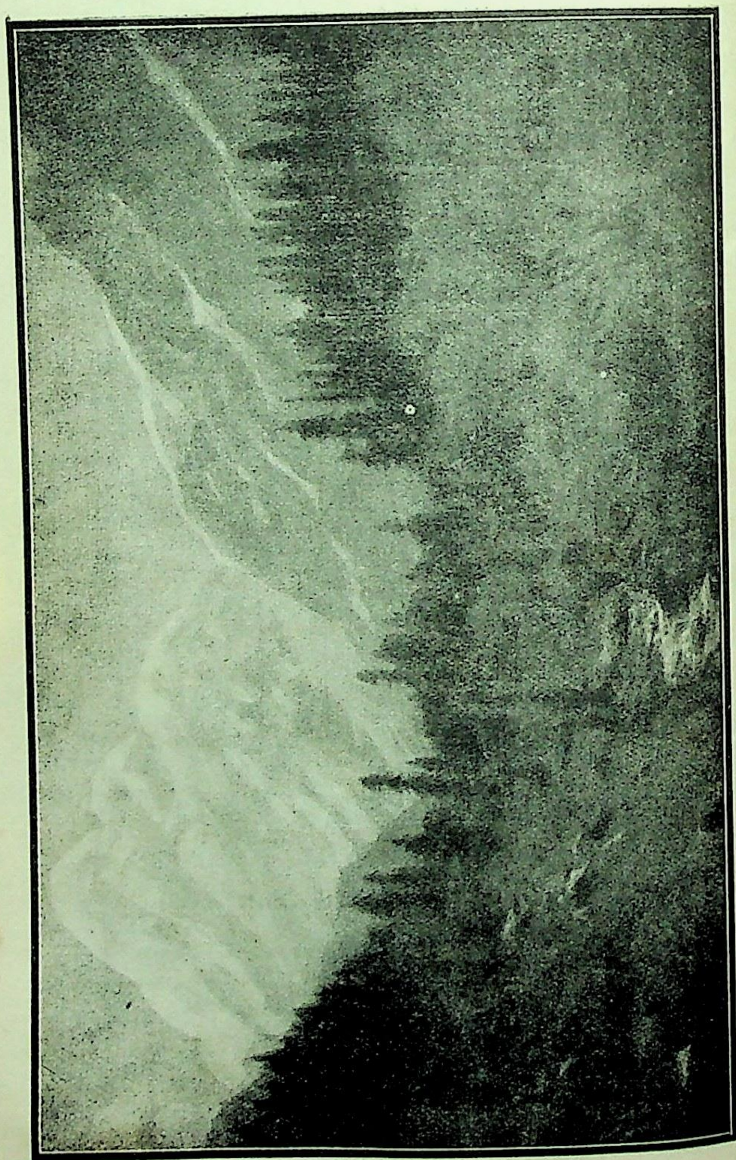
जब हम हिन्दुस्तान का वर्णन करते हैं तो हमारा अभिप्राय **ब्रह्मदेश** के सूबे को छोड़कर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के राज्य से होता है।

नक़शे मे जिन स्थानों को नीले रंग से दिखाया गया है वे समुद्र के भाग हैं। समुद्र के भिन्न-भिन्न भागों के भिन्न-भिन्न नाम रक्खे गये हैं, जिनके उदाहरण तुम इस नक़शे में देखते हो। जैसे **खाड़ी**

चौड़े मुँह के जल का ऐसा भाग है जो कुछ दूर तक स्थल में चला गया हो जैसे **बंगाल की खाड़ी**, जो हिन्दुस्तान को ब्रह्मदेश से अलग करती है। यह खाड़ी कभी अधिक संकीर्ण हो जाती है, जैसे फ़ारस की खाड़ी, जो अरब और फ़ारस के बीच में है। **सागर** खारी पानी का वह बड़ा भाग है जिसको स्थल ने समुद्र के शेष भाग से कुछ कुछ (और कभी कभी सम्पूर्ण रूप से) अलग कर दिया हो, जैसे अरब सागर जो अरब और हिन्दुस्तान दोनों प्रायद्वीपों के बीच में है और **लाल सागर** जो इससे भी अधिक घिरा हुआ है और जिसमें से होकर जहाज़ हिन्दुस्तान से इँगलिस्तान को जाते हैं। खारी पानी के यह सब भाग वास्तव में हिन्द महासागर ही के अंश हैं।

हिन्दुस्तान के समीप उत्तर की ओर जो देश हैं वह भी तुमको इस नक़शे से मालूम हो जायँगे। उत्तर-पश्चिम में **रूस प्रजातन्त्र राज्य** का भाग है जो अफ़ग़ानिस्तान के बीच में आ जाने से हिन्दुस्तान से अलग हो गया है। उत्तर-पूर्व में चीन प्रजातन्त्र राज्य का भाग है और हिन्दुस्तान से इससे भी समीप **तिब्बत** का देश है। तिब्बत और हिन्दुस्तान के बीच में नैपाल और भूटान देश हैं जो ब्रिटिश गवर्नमेंट के अधीन हैं।

रूस और चीन के प्रजातन्त्र राज्य यद्यपि भारत-साम्राज्य के समीप ही हैं तो भी हिन्दुस्तान इन देशों के साथ अधिकांश समुद्री मार्ग ही से व्यापार करता है। इसका क्या कारण है? नक़शे को देखने से तुमको इसका उत्तर मिल जायगा। काली मोटी रेखायें, जो नक़शे में खिंची हुई हैं, **पहाड़ों** के चिह्न हैं



यह स्थल के बहुत बड़े-बड़े टीले हैं जो मैदानों और समुद्र के धरातल से बहुत ऊँचे उठे हुए होते हैं। हिन्दुस्तान के उत्तर में दुनिया में सबसे ऊँचे पहाड़ हैं। इन्हीं बड़े-बड़े पहाड़ों को **हिमालय की श्रेणियाँ** कहते हैं। हिन्दुस्तान के मैदानों में रहनेवाले लड़कों को हिमालय की श्रेणियों की दशा का अनुभव करना कठिन होगा। यह बड़े-बड़े पहाड़ मैदानों से २०,००० फ़ुट (लगभग ४ मील) ऊँचे हैं; कहीं-कहीं तो यह ५ मील तक ऊँचे चले गये हैं। नीचे के भाग वन और जङ्गलों से ढके हुए हैं। इसके ऊपर वायु इतनी ठण्डी होती है कि पेड़ नहीं उग सकते, केवल घास जमती है; इससे ऊपर घास भी नहीं उग सकती, वहाँ केवल चट्टान ही चट्टान दिखलाई पड़ती हैं। १५,००० फ़ुट की उँचाई पर और उसके आगे बर्फ़ ही बर्फ़ देख पड़ती है।

हिमालय की एक ही श्रेणी नहीं है। इसकी कई श्रेणियाँ हैं जो एक-दूसरी के पीछे २०० मील तक लगातार चली गई हैं। इन ऊँची श्रेणियों के बीच में गहरी घाटियाँ हैं जिनमें नदियाँ बहती हैं। ये बर्फ़ के पिघलने से बनी हैं।

इन पहाड़ों के पार करने के लिए गाड़ियों की कोई सड़क नहीं है। तिब्बत से थोड़ा बहुत व्यापार होता है जिसके लिए बंजारे, आदमी और जानवरों की पीठों पर, माल ले जाते हैं। बंजारों को पतली और खड़ी पगडण्डियों पर पहाड़ों की परिक्रमा करते हुए जाना पड़ता है; जाड़े में यह मार्ग भी बर्फ़ से बन्द हो जाता है।

हिन्दुस्तान के बाहर हिमालय की और भी बड़ी-बड़ी श्रेणियाँ

चली गई हैं। इनमें से **कराकुरम की श्रेणी** और **हिन्दुकुश की श्रेणी** प्रधान गिनी जाती हैं जो कि रूस के राज्य से हिन्दुस्तान में आने के लिए बाधक होती हैं।

इन ऊँचे पहाड़ों की शाखायें उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम तक चली गई हैं; यह भी हिन्दुस्तान को आसपास के देशों से अलग करती हैं। हम नक़शे में देखते हैं कि ये शाखायें उत्तर-पश्चिम में **सुलेमान श्रेणी** और **किरथार श्रेणी** हैं; यद्यपि यह हिमालय पहाड़ से बहुत नीची हैं तो भी इनके पार होने के लिए केवल थोड़े से मार्ग हैं जो घाटियाँ कहलाती हैं। उत्तर-पूर्व में एक शाखा **पटकोई की श्रेणी** है; यह पहाड़ भी हिमालय से नीचे हैं परन्तु घने वनों, गहरी घाटियों और वेग से बहनेवाली नदियों के कारण इनका पार करना कठिन है।

अब तुम समझ गये होगे कि हिन्दुस्तान क्यों स्थल-मार्ग से और देशों के साथ बहुत कम व्यापार करता है। पर्व्वत-श्रेणियाँ बड़ी-बड़ी ऊँची दीवारों के सदृश हैं जिन पर चढ़ना असम्भव है। इन पहाड़ों के कारण हिन्दुस्तान के लोग रूस, चीन और ब्रह्मदेश के लोगों से सुगमता से मिल-जुल नहीं सकते; इसलिए यह लोग इन देशों के निवासियों से धर्म, भाषा, वेश और रीति-व्यवहार में सर्वथा भिन्न हैं।

सच तो यह है कि हिमालय पहाड़ के कारण हिन्दुस्तान के लोग और देशों के निवासियों से व्यापार नहीं कर सकते तो भी इन पहाड़ों से हिन्दुस्तान का बड़ा उपकार होता है।

प्रथम लाभ तो यह है कि इन पहाड़ों से हिन्दुस्तान की रक्षा



होती है। बाहर की सेनाओं को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए केवल उत्तर-पश्चिम की घाटियों को छोड़कर और कोई मार्ग नहीं है। इन घाटियों की रक्षा के लिए क़िले बने हुए हैं जहाँ अँगरेज़ी और हिन्दुस्तानी सिपाही बड़ी सावधानी से पहरा देते हैं और शत्रुओं को इन घाटियों से होकर घुसने नहीं देते। इनमें सबसे प्रसिद्ध घाटी **ख़ैबर की घाटी** है। इस घाटी का ठीक स्थान अध्यापक तुमको बड़े नक़शे में दिखलायेंगे।

हिमालय पहाड़ से एक और बहुत बड़ा लाभ, जो हिन्दुस्तान को पहुँचता है, यह है कि वह हिन्दुस्तान को जल पहुँचाने में सहायता देता है। यह सहायता दो रीति से होती है:—(१) अरब सागर और बंगाल उपसागर से जो बादल उठते हैं वह इन ऊँचे पहाड़ों के कारण हिन्दुस्तान से बाहर नहीं जा सकते। इनसे टकराकर लौट आते हैं और उनका जल हिन्दुस्तान के मैदानों में बरस जाता है। (२) पहाड़ों की बर्फ़ के पिघलने से और वर्षा के जल से बड़ी-बड़ी नदियाँ बनती हैं जो हिन्दुस्तान के मैदानों में बहती हैं और खेती को जल पहुँचाती हैं।

अब तुमको विदित हो गया होगा कि इन पहाड़ों का हिन्दुस्तान पर चार प्रकार से प्रभाव पड़ता है—

(१) यह हिन्दुस्तान के रहनेवालों को और देश के रहनेवालों से व्यापार करने तथा सुगमतापूर्वक मिलने-जुलने नहीं देते।

(२) हिन्दुस्तान को आक्रमणों से बचाते हैं।

(३) मेंह बरसानेवाली हवाओं को हिन्दुस्तान से बाहर नहीं जाने देते।

(४) हिमालय के पहाड़ों से बड़ी-बड़ी नदियाँ निकलती हैं जो हिन्दुस्तान के मैदानों को जल पहुँचाती हैं।

प्रश्नावली

१—निम्नलिखित नामों से क्या अभिप्राय है:—

प्रायद्वीप, पर्व्वतश्रेणी, घाटी, सागर और खाड़ी। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दो।

२—हिन्दुस्तान के निवासी ब्रह्मदेश के निवासियों से वेष और भाषा में क्यों भिन्न हैं?

३—हिन्दुस्तान के निवासियों को इस बात पर क्यों अभिमान करना चाहिए कि उनके देश में उत्तर की ओर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बहुत ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं?

४—हिन्दुस्तान के मैदानों की खेती को जल पहुँचाने के लिए हिमालय पहाड़ कैसे सहायता करता है?

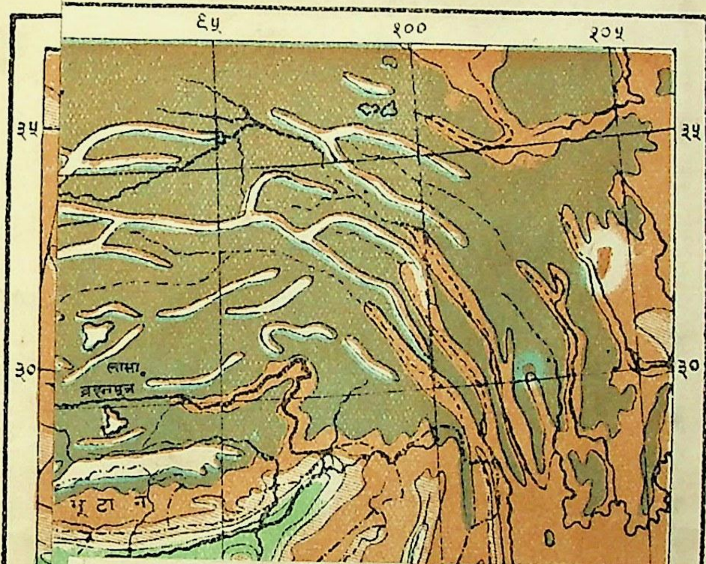
५—हिमालय के उत्तर की भूमि दक्षिण की भूमि की अपेक्षा क्यों अधिक सूखी है?

अभ्यास

दिये हुए ख़ाके पर निम्नलिखित के स्थान और नाम चिह्नित करो—

(१) फ़ारस की खाड़ी, (२) हिमालय, (३) बंगाल की खाड़ी, (४) तिब्बत, (५) अफ़ग़ानिस्तान, (६) ब्रह्मदेश, (७) अरब, (८) लाल सागर, (९) अरब सागर, (१०) फ़ारस।

———


९५
१००
१०५
३५
३५
३०
३०
लासा
ब्रह्मपुत्र
भू टा न

भारतवर्ष - प्राकृतिक और राष्ट्रीय।

अफगानिस्तान

हिन्दूकुश पर्वत

काराकोरम पर्वत

पेशावर

श्रीनगर

सुलेमान पर्वत

कैलाचिस्तान

मुलतान

अम्बाला

मसूरी

नैनीताल

मेरठ

दिल्ली

बरेली

जयपुर

अजमेर

जोधपुर

राजपूताना

सिन्धु

कराची

कर्क रेखा

ग्वालियर

लखनऊ

कानपुर

दार्जिलिंग

भूटान

ल्हासा

ब्रह्मपुत्र

पटना

गया

बिहार

उदयपुर

अहमदाबाद

काठियावार

भोपाल

इंदौर

जबलपुर

नागपुर

कलकत्ता

ढाका

बम्बई

पूना

हैदराबाद

पुरी

अरब का सागर

बङ्गाल की खाड़ी

मर्तबान की खाड़ी

मद्रास

बङ्गलोर

पांडिचेरी

कालिकोट

कोचीन

मदुरा

लक्षद्वीप

आन्दामान द्वीप

निकोबार द्वीप

सिलोन

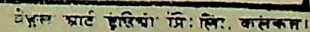
कोलम्बो

कन्याकुमारी अन्तरीप

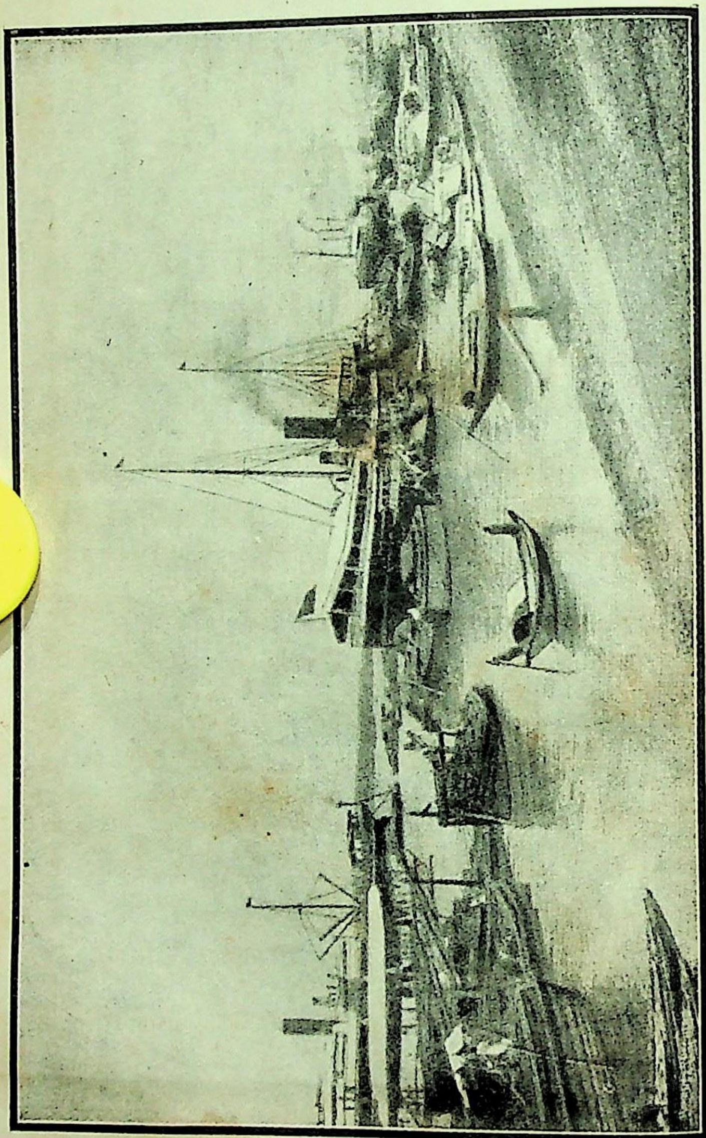
मानर की खाड़ी

रंग संकेत।

	१८००० फुट से ऊँचा
	१२००० " " १८००० फुटतक
	३००० " " १२००० " "
	१००० " " ३००० " "
	६०० " " १००० " "
	समुद्र की सतह स ६०० फुटतक







हुगली नदी

तीसरा अध्याय

हिन्दुस्तान के तट और द्वीप

मान लो कि हम हिन्दुस्तान के समुद्रतट के चारों ओर जहाज़ में यात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा के लिए हम कलकत्ते से जहाज़ पर सवार होते हैं। कलकत्ता हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा नगर है; यह **हुगली नदी** के किनारे बसा हुआ है जो **गंगा नदी** की शाखाओं में से एक है। इस नगर में बहुत बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। कलकत्ते से समुद्र की ओर जाते समय हमें इन कारख़ानों की ऊँची चिमनियों से धुआँ निकलता हुआ दिखाई देता है। रास्ते में जितने छोटे-बड़े जहाज़ों के पास से हम गुज़रते हैं उनकी संख्या से हमें इस बात का कुछ अनुमान होता है कि कलकत्ता कितने बड़े व्यापार का स्थान है। कहीं तो यह दिखलाई पड़ता है कि कुछ जहाज़ों में लोग चाय, चावल आदि ऐसी चीज़ें लाद रहे हैं जो हिन्दुस्तान और-और देशों के हाथ बेचता है और कुछ जहाज़ों से लोग मिट्टी का तेल और कलें आदि ऐसी चीज़ें उतार रहे हैं जो और-और देशों से हिन्दुस्तान ख़रीदता है।

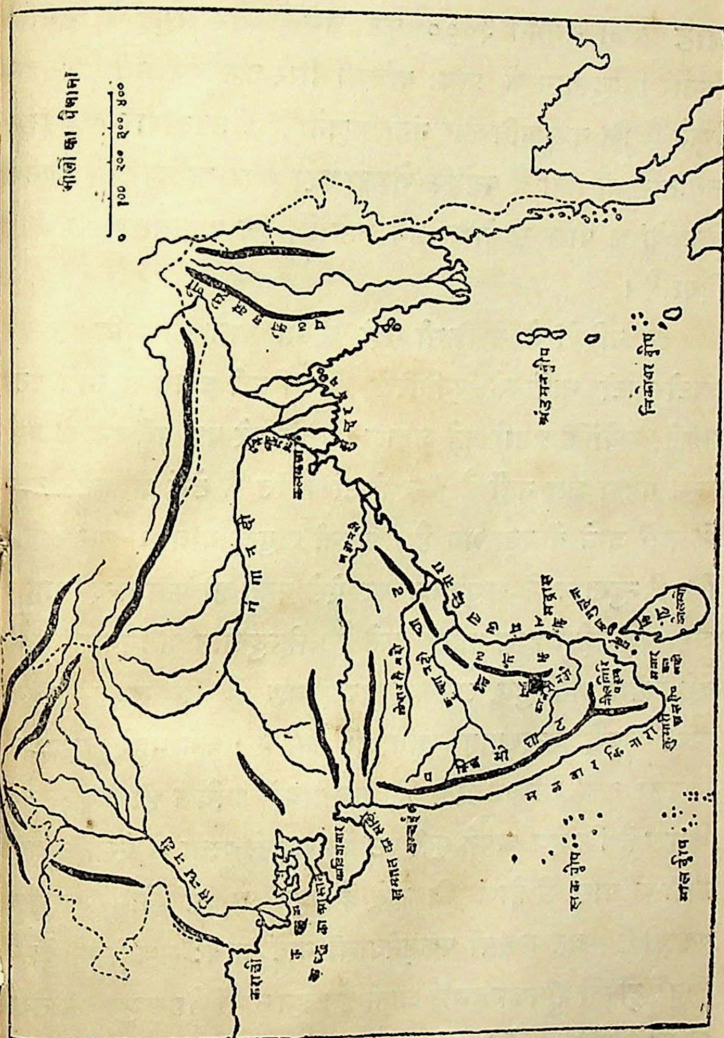
हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं क्योंकि हुगली बड़ी भयानक नदी है जिसमें जल बड़े वेग से बहता है और उसके भीतर रेत के टीले जो सदा स्थान बदलते रहते हैं बहुत पाये जाते हैं। परन्तु हमारा जहाज़ बड़ी सावधानी से चलाया जाता है और इसलिए

हम बहुत शीघ्र खुले समुद्र में पहुँच जाते हैं । नक़शे के देखने से हमें विदित होता है कि हम **सुन्दरबन** के सामने आगये । यह सुन्दरबन द्वीपों और तटों का एक समूह है जो समुद्र के तट पर लगभग २०० मील तक फैला हुआ है और उस मिट्टी और रेत से बना हुआ है जो गंगा नदी अपने साथ वहा कर बहुत से मुहानों के द्वारा समुद्र में डालती है । गंगा नदी का जल जब समुद्र में पहुँचता है तो बिलकुल ठहर जाता है और इस कारण रेत और कीच तह में जम जाती है । सुन्दरबन में बहुत से मगर और बाघ इत्यादि जंगली जीव-जन्तु रहते हैं ।

तुम देखोगे कि हिन्दुस्तान की कई बड़ी बड़ी नदियाँ गंगा नदी की भाँति जब समुद्र के पास पहुँचती हैं तो कई धाराओं में बँट जाती हैं । जब कोई ऐसी नदी अपने मुहाने के निकट बहुत सी धाराओं में बँट जाती है तो वहाँ उस नदी की लाई हुई मिट्टी, रेत आदि से एक नीची चौरस भूमि बन जाती है । ऐसी भूमि को **डेल्टा** कहते हैं ।

गंगा नदी के डेल्टे से होकर हम शीघ्र ही एक और नदी पर जिसका नाम **महानदी** है पहुँचते हैं । नक़शे से तुमको विदित होता है कि गंगा के सदृश इस नदी की भी—समुद्र के निकट पहुँचने पर कई धारायें हो गई हैं । इसके मुहाने भी गंगा नदी के मुहानों की भाँति बने हुए हैं । नदी अपनी ही लाई हुई रेत और मिट्टी से रुक जाती है और इस प्रकार कई शाखाओं में बट जाती है ।

आगे चलकर हमको पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं, यह पूर्वी

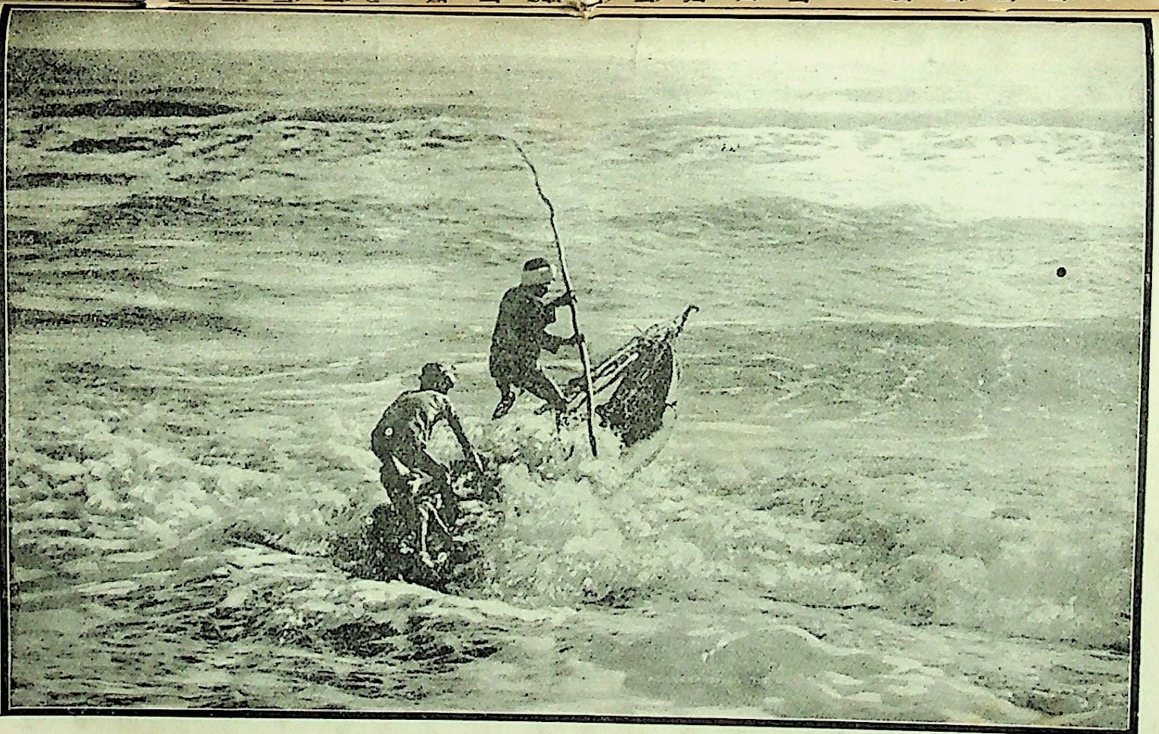


हिन्दुस्तान के तट और द्वीप

घाट हैं जो लगभग ३००० फ़ुट ऊँचे हैं और समुद्र के किनारे-किनारे हिन्दुस्तान के प्राय: दक्षिणी सिरे तक चले गये हैं। हम देखते हैं कि यह अधिकतर नंगी चट्टानें हैं, और दीवार के सदृश लगातार भी नहीं हैं क्योंकि **गोदावरी** और **कृष्णा** ने, जिनके डेल्टाओं के पास से होकर हम जाते हैं, इस पर्वतश्रेणी को तोड़ दिया है।

इन नदियों में से किसी नदी के भी पास की भूमि पर हम छोटी-छोटी नावों के अतिरिक्त और किसी उपाय से नहीं उतर सकते, क्योंकि हमारे बड़े जहाज़ को किनारे पर पहुँचने के लिए इनमें गहरा जल नहीं है और डेल्टा के रेत के ढेरों के हटते रहने से वहाँ जाने में बड़ा भय है। अपनी समुद्री यात्रा में तुम देखोगे कि हिन्दुस्तान के समुद्र-तट पर ऐसे बहुत ही कम बन्दरगाह हैं जहाँ बड़े-बड़े जहाज़ ठहर सकते हैं। हिन्दुस्तान के निवासी कभी बड़े मल्लाह नहीं हुए, इसका कारण यह है कि समुद्र-तट पर अच्छे-अच्छे बन्दरगाह बहुत ही कम हैं। कम गहरे समुद्रों में, जिनका तल रेतीला होता है, मछलियाँ अधिक होती हैं; यही कारण है कि हम अपने पूर्वी तट की समुद्री यात्रा में ऐसी बहुतसी नावों के पास से होकर निकलते हैं जिन पर से लोग मछलियां पकड़ते हैं। यह मछली पकड़नेवाली नावें प्राय: लकड़ी के दो या तीन लट्ठों को बाँधकर बनाई जाती हैं। इन नावों को समुद्र की तरङ्गों के ऊपर ले जाने में मछुए बड़ी निपुणता दिखलाते हैं। सामने के चित्र में इसी प्रकार की एक नाव समुद्र में चलती हुई दिखाई गई है।

पूर्वी तट के दक्षिणी भाग को **कारोमण्डल** तट कहते



पूर्वी किनारे पर मछली पकड़नेवाली नाव।

और इसके पूर्वी घाट के बीच में जो सँकरी भूमि चली गई है उसका चौड़ा भाग **करनाटक** कहलाता है।

कलकत्ते से लगभग १००० मील चलकर हम **मद्रास** के बन्दरगाह पर पहुँचते हैं, जो हिन्दुस्तान के दक्षिण में बहुत ही प्रसिद्ध नगर है और कलकत्ते को छोड़कर पूर्वी तट पर सबसे बड़ा बन्दरगाह है। मद्रास का बन्दरगाह कलकत्ते के बन्दरगाह के सदृश नदी के किनारों पर नहीं बना हुआ है बरन् यह बहुत बड़े व्यय से समुद्र में मज़बूत दीवारें बनाकर तैयार किया गया है। हम इस बन्दरगाह में उतरते हैं। मद्रास को देखने से जान पड़ता है कि जहाज़ी व्यापार के कारण यद्यपि यह बहुत बड़ा नगर हो गया है तो भी यहाँ पर कलकत्ते के सदृश न तो व्यापार होता है और न वैसी भीड़-भाड़ ही है। कल-कारख़ाने भी यहाँ पर कलकत्ते की अपेक्षा बहुत कम हैं।

मद्रास को छोड़कर अब हम दक्षिण की ओर चलते हैं। अभी हम बङ्गाल की खाड़ी ही में हैं। नक़शे के देखने से विदित होता है कि यहाँ से पूर्व में बहुत दूर पर दो छोटे-छोटे द्वीप-समूह हैं जिनमें से उत्तरी को **अंडमन द्वीपसमूह** और दक्षिणी को **नीकोबार द्वीपसमूह** कहते हैं। यह पहाड़ी द्वीप हैं जिनके बहुत से भाग में जङ्गल ही जङ्गल है। इनमें से किसी-किसी द्वीप में बड़ी मीआद के भारतीय क़ैदी भेजे जाते हैं।

जैसे-जैसे हम हिन्दुस्तान के दक्षिण की ओर बढ़ते जाते हैं, हमें तट पर जहाँ-तहाँ नारियल के वृक्षों के झुण्ड दिखाई देते हैं। यह वृक्ष हिन्दुस्तान के दक्षिणी तटों पर बहुत फलते हैं जहाँ

रेतीली ज़मीन और गरम और नम हवा होती है। नारियल की जटा से चटाइयाँ और रस्से बनाते हैं, गरी से तेल निकालते और पत्तों से झोंपड़े छाते हैं।

अब हम **लंका** द्वीप के निकट पहुँच रहे हैं। नक़शे में हम देखते हैं कि एक सँकरा जल का रास्ता बंगाल की खाड़ी को अरब सागर से मिलाता है। जल के ऐसे तङ्ग रास्ते को जो जल के अन्य दो बड़े भागों को मिलाता है, **जलडमरुमध्य** कहते हैं। हमारे नक़शे से प्रकट है कि बंगाल उपसागर और अरब सागर को जो जलडमरुमध्य मिलाता है उसे **पाक जलडमरुमध्य** कहते हैं। इसमें से होकर जहाज़ों के जाने में विपत्ति की शंका रहती है क्योंकि यह कम गहरा है और इसमें बहुतसी भयानक चट्टानें और छोटे-छोटे द्वीप हैं। इन द्वीपों में से दो छोटे-छोटे द्वीपों के चिह्न नक़शे में दिखाई देते हैं। यह **मूँगे** की चट्टानों से एक-दूसरे से मिले हुए हैं; मूँगे को छोटे-छोटे कीड़े समुद्र के चूने से बनाते हैं। इन चट्टानों को **आदम का पुल** कहते हैं। चूँकि हम पाक जलडमरुमध्य में से होकर नहीं जा सकते, इसलिए हम लंका के गिर्द होकर जाते हैं। इस द्वीप का तट देखने में बहुत ही सुन्दर है। हमको जहाज़ में से ही पीली रेत और नारियल के वृक्षों के झुण्ड समुद्र-तट के बराबर दूर तक फैले हुए दिखाई देते हैं; इनसे कुछ भीतर की ओर धान के हरे हरे खेत और बहुतसे वृक्ष हैं; इससे भी पीछे बहुत दूर पर पहाड़ियाँ मालूम होती हैं। इन पहाड़ियों पर चाय के वह बड़े-बड़े बग़ीचे हैं जिनके लिए लङ्का प्रसिद्ध है।

आगे चलकर इस द्वीप के पश्चिमी तट पर **कोलम्बो** के बन्दरगाह पर पहुँचते हैं। यह, मद्रास की भाँति, प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं है, वरन् समुद्रमें पुष्ट दीवार उठाकर बनाया गया है। जैसे ही हम बन्दरगाह में पहुँचते हैं वैसे ही देखते हैं कि दुनिया के सब भागों के आये हुए जहाज़ यहाँ पर इकट्ठा हैं। पृथ्वी के गोले के देखने से तुमको विदित होगा कि कोलम्बो उन जहाज़ों के ठहरने के लिए बहुत ही सुभीते का स्थान है जो योरप से पूर्वी एशिया को, योरप से आस्ट्रेलिया को, अथवा अफ़्रीक़ा से पूर्वी एशिया को आते-जाते हैं। लङ्का में कोयले के गोदाम हैं। यह कोयला यहाँ पर इँगलिस्तान से आता है और उन जहाज़ों के हाथ बिकता है जिनको अपने इंजनों के लिए कोयले की आवश्यकता होती है।

लंका से चलने पर हम दाहिनी ओर **मनार की खाड़ी** को छोड़कर निकलते हैं जो लंका और हिन्दुस्तान के बीच में है। यहाँ का पानी कम गहरा और तल रेतीला है इसलिए यह खाड़ी उन **सीपियों** के उत्पन्न होने के लिए बहुत ही उपयोगी है जिनसे मोती मिलते हैं। इस खाड़ी के सिरे में हम **कुमारी अन्तरीप** से होकर जाते हैं, जो हिन्दुस्तान की दक्षिणी नोक है।

अब हम हिन्दुस्तान के पश्चिमी तट पर पहुँच गये। समुद्र में बहुत दूर पर **मालद्वीप द्वीपसमूह** है और इससे उत्तर की ओर **लंकाद्वीप द्वीपसमूह** है। यह द्वीपसमूह समुद्र के धरातल से केवल थोड़े ही फ़ीट ऊँचे हैं। यहाँ के निवासी मछलियाँ पकड़-

कर और नारियल के वृक्ष लगाकर, जो इन द्वीपों में बहुत होते हैं, अपना निर्वाह करते हैं ।

हिन्दुस्तान के पश्चिमी तट का दक्षिणी भाग **मलाबार तट** कहलाता है। कोरोमण्डल तट के सदृश यहाँ भी नारियल के पेड़ बहुत होते हैं । मलाबार तट पर हमको कोई भी डेल्टा नहीं मिलता, परन्तु यदि तुम हिन्दुस्तान का कोई बड़ा नक़शा लेकर देखो तो तुमको विदित होगा कि इस तट में भी जल के बहुत छोटे-छोटे कटान हैं । बड़े-बड़े जहाज़ यहाँ पर नहीं ठहर सकते क्योंकि यहाँ समुद्र बहुत ही कम गहरा है परन्तु यह कटान छोटी-छोटी नावों की रक्षा के लिए, जिनके द्वारा किनारे पर व्यापार होता है, बहुत ही अच्छे स्थान हैं ।

पूर्वी तट के सदृश पश्चिमी तट पर भी पहाड़ों की श्रेणी बराबर चली गई है । पश्चिमी तट की यह श्रेणी **पश्चिमी घाट** के नाम से प्रसिद्ध है । यह पूर्वी घाट से **नीलगिरि पर्वत** के द्वारा मिली हुई है। पश्चिमी घाट पूर्वी घाट की अपेक्षा लगभग १००० फ़ीट ऊँचा है और तट से अधिक समीप है तथा बीच में नदियों के न आने से कटा हुआ भी नहीं है । इसमें पूर्वी घाट की अपेक्षा जङ्गल भी बहुत हैं क्योंकि अरब सागर से जो हवायें चलती हैं वह पश्चिमी घाट पर बहुत मेंह बरसाती हैं ।

कोलम्बो से लगभग १००० मील चलकर हम हिन्दुस्तान में सबसे अच्छे और दुनिया के अत्यन्त सुन्दर बन्दरगाह पर पहुँचते हैं । यह **बम्बई** का बन्दरगाह है जिसकी गहराई इतनी अधिक है कि इसमें बड़े से बड़े जहाज़ भी ठहर सकते हैं । चूँकि यह

चारों ओर द्वीपों से घिरा हुआ है इसलिए घोर तूफ़ान के समय में भी जहाज़ों की रक्षा के लिए यह बहुत ही उत्तम स्थान है। नक़शे पर देखने से तुमको विदित होगा कि बम्बई हिन्दुस्तान के मध्यभाग के सबसे अधिक निकट का बन्दरगाह है; इस कारण देश के सब भागों से माल यहाँ शीघ्र भेजा जा सकता है और इँगलिस्तान से आने-जानेवाले मनुष्यों के लिए भी यह सुभीते का बन्दरगाह है। बम्बई के आसपास के देश में रुई बहुत उत्पन्न होती है इसलिए बम्बई में रुई के बहुत से कारख़ाने हैं। इन सब बातों से यह प्रकट है कि बम्बई बहुत ही बड़ा व्यापारिक बन्दरगाह है।

नक़शे पर बम्बई के उत्तर में **खम्बायत** (कैम्बे) **की खाड़ी** और **कच्छ की खाड़ी** के आकार बने हुए हैं। यह खाड़ियाँ **काठियावाड़** के प्रायद्वीप को अलग किये हुए हैं, परन्तु हमारा जहाज़ इन खाड़ियों के भीतर नहीं जा सकता क्योंकि यह बहुत कम गहरी हैं। उत्तर की ओर कुछ आगे बढ़कर **कच्छ का रन** मिलता है। यह भी बहुत कम गहरा है और गर्मी की ऋतु में तो बिलकुल सूखा रेतीला मैदान सा पड़ा रहता है।

सिन्ध नदी के डेल्टा तक हमको कोई और बन्दरगाह ठहरने को नहीं मिलते, परन्तु इससे थोड़ी ही दूर उत्तर की ओर बढ़कर एक और बन्दरगाह मिलता है जिसका नाम **कराची** है। यह हमारी यात्रा का अन्तिम स्थान है। कराची के चारों ओर का देश बंजर है परन्तु हिन्दुस्तान के उत्तर से रेलों-द्वारा यहाँ जाने में बड़ा सुभीता है और हिन्दुस्तान से योरप माल

भेजने के लिए यह बन्दरगाह सबसे निकट पड़ता है इसलिए यहाँ से उत्तरी हिन्दुस्तान का गेहूँ बाहर बहुत भेजा जाता है ।

प्रश्नावली

१—निम्नलिखित क्या हैं और कहाँ स्थित हैं—
सुन्दरबन, आदम का पुल, मालद्वीप, कच्छ का रन और करनाटक ?

२—हिन्दुस्तान के निवासी कभी बड़े मल्लाह क्यों नहीं हुए ?

३—डेल्टा से क्या अभिप्राय है ? हिन्दुस्तान के पूर्वी तट के चार प्रसिद्ध डेल्टों के नाम बताओ ।

४—निम्नलिखित बन्दरगाहों के व्यापार की उन्नति के कारण बताओ—
कोलम्बो, बम्बई और कराची ।

५—हिन्दुस्तान के पूर्वी तट पर मछली पकड़ने के लिए क्या सुभीता है ?

अभ्यास

१—पृष्ठ १८ पर जो नक़शे का पैमाना काम में लाया गया है उसको लेकर नीचे की दूरी जहाँ तक सम्भव हो ठीक-ठीक बताओ—

(१) कुमारी अन्तरीप से लेकर उसके ठीक उत्तर हिन्दुस्तान की उत्तरी सीमा की दूरी ।

(२) हिन्दुस्तान की अधिक से अधिक चौड़ाई ।

(३) निम्नलिखित नगरों की दूरी –

(क) कलकत्ता और बम्बई ।

(ख) बम्बई और मद्रास ।

(ग) मद्रास और कलकत्ता ।

(घ) कराची और कलकत्ता ।

२—हिन्दुस्तान के ख़ाके पर नीचे के नाम चिह्न-सहित दिखाओ—
कलकत्ता, कच्छ का रन, मालद्वीप, मद्रास, नीकोबार द्वीपसमूह, कराची,

सुन्दरबन, कुमारी अन्तरीप, खम्भात की खाड़ीं, बम्बई, कोलम्बो और पाक जलडमरुमध्य।

३—हिन्दुस्तान के ख़ाके पर निम्नलिखित स्थानें की स्थिति चिह्नों से दिखाओ और उनके नाम भी लिखे—

लङ्काद्वीप, अंडमनद्वीप, काठियावाड़, कोरोमण्डल तट, कच्छ की खाड़ी, मलाबार तट, मनार की खाड़ी, पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट, नीलगिरि और करनाटक।

देखो नोट पृष्ठ ८

चौथा अध्याय

हिन्दुस्तान का धरातल

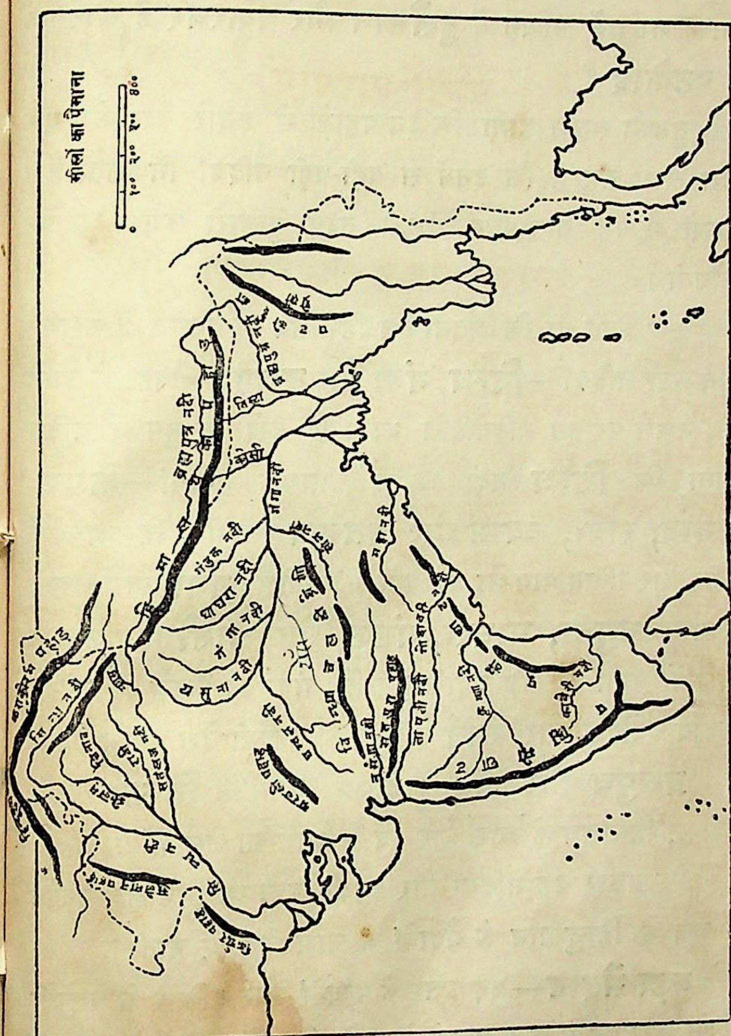
पहाड़, मैदान और नदियाँ

यदि हम हवाई जहाज़ में बैठकर हज़ारों फ़ीट ऊँचे चढ़ जायँ और हमारी दृष्टि भी ऐसी तीव्र हो जाय कि हम सारे हिन्दुस्तान को एक साथ देख सकें तो हमको यह देश कैसा दिखाई देगा? हमको चार दशायें पृथक्-पृथक् अवश्य दिखाई देंगी:—

(१) उत्तर में बहुत ऊँचे पहाड़, (२) पहाड़ों के नीचे चौरस मैदान, (३) ऊँची भूमि जो हिन्दुस्तान के लगभग सारे त्रिभुजाकार भाग में है और देश के चौड़े भाग में भी दूर तक फैली हुई है, (४) त्रिभुज के किनारों पर नीची चौरस और सँकरी भूमि।

इस प्रकार हिन्दुस्तान को प्रकृति ने चार बड़े भागों में बाँट दिया है—(१) उत्तरी पहाड़, (२) बड़ा मैदान, (३) दक्षिणी पहाड़ी देश, (४) समुद्र-तट के मैदान।

उत्तरी पहाड़—तुम पढ़ चुके हो कि हिन्दुस्तान के उत्तर में एक बहुत बड़ा पहाड़ दीवार-सा खड़ा है। यह **हिमालय** पर्व्वत की श्रेणियाँ हैं। यह उत्तर-पश्चिम में **कराकुरम** और **हिन्दूकुश** की श्रेणियों के नाम से प्रसिद्ध हैं, और



हिन्दुस्तान के पहाड़ और नदियाँ

इनकी शाखायें पश्चिम में **सुलैमान** और **किरथर** हैं और पूर्व में **पटकोई** है।

तुमको स्मरण होगा कि इन पहाड़ों से हमारे देश को एक बड़ा लाभ यह है कि इनमें से बड़ी-बड़ी नदियाँ निकलती हैं। नक़शे से यह बात और अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ जायगी।

तुम देखते हो कि जितना जल हिमालय पर बरसता है उसको तीन बड़ी नदियाँ—**सिन्ध, गंगा** और **ब्रह्मपुत्र**—बहा ले जाती हैं। नक़शे पर इन नदियों को ध्यान से देखो तो तुमको विदित होगा कि **सिन्ध** नदी अपनी सहायक नदियों—**झेलम, चनाब, राबी, व्यास** और **सतलज**—समेत हिमालय के उत्तर और पश्चिम भाग का जल बहा ले जाती है। **गंगा** तथा उसकी सहायक **यमुना, घाघरा, गंडक,** और **कोसी** हिमालय के बीच के भागों का जल बहा लाती हैं। गंगा की केवल दो प्रसिद्ध सहायक **टोंस** और **सोन** दक्षिण के पहाड़ी देश से निकलती हैं। **ब्रह्मपुत्र** और उसकी सहायक, जिनमें से **तिस्टा** सबसे बड़ी है, हिमालय के उत्तर और पूर्व के भाग का जल ले आती हैं।

इस प्रकार यह नदियाँ और इनकी सहायक हिमालय पर्व्वत के जल को हिन्दुस्तान के मैदानों के लाभ के लिए लाती हैं।

बड़ा मैदान—यह उत्तर के पर्व्वतों और दक्षिण के पहाड़ी प्रदेशों के बीच में है। इसके दो बड़े भाग हैं। एक पश्चिम में **सिन्ध नदी का मैदान** है जो दक्षिण-पश्चिम की ओर ढालू है, जैसा तुम सिन्ध नदी और उसकी सहायक नदियों के बहाव

से देख सकते हो। दूसरा पूर्व में **गंगा नदी का मैदान** है जो पूर्व की ओर ढालू है।

नक़शे के देखने से तुमको विदित होगा कि सिन्ध और गंगा बहुत चक्कर खाती हुई बहती हैं जिससे प्रकट होता है कि जिस भूमि पर यह दोनों नदियाँ बहती हैं वहाँ चौरस है। वास्तव में इस बड़े मैदान का अधिक भाग समुद्र के धरातल से ६०० फ़ीट से अधिक ऊँचा नहीं है। इस बड़े मैदान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अगर कोई यात्रा करे तो उसको एक पहाड़ी भी न दिखाई देगी।

इस बड़े मैदान की नदियों ने इस देश की भूमि को उपजाऊ बना दिया है और अच्छी खेती के लिए दो आवश्यक वस्तुयें, जल और उत्तम मिट्टी, एकत्रित कर दी हैं।

यह नदियाँ भूमि को कैसे जल पहुँचाती हैं, यह समझना सहज है। यह चक्कर खाती हुई धीरे-धीरे मैदान में बहा करती हैं, इससे भूमि जल को सोख लेती है, और यह जल फिर खेती के लिए कुआँ खोदने से मिल सकता है। खेतों में **नहरों** के द्वारा भी, जो नदियों से निकाली जाती हैं, जल पहुँचाया जाता है। नहरें पानी के लम्बे-लम्बे नाले हैं जो नदियों से खेतों तक पानी ले जाते हैं। इस बड़े मैदान की भूमि बहुत चौरस है और इसकी मिट्टी भी रेतीली है इसलिए इन नहरों का बनाना कठिन नहीं है। इस बड़े मैदान में बहुतसी नहरें हैं। देश के जिन भागों में वर्षा बहुत कम होती है वहाँ यह जल पहुँचाती हैं, इस प्रकार मरुस्थल की बञ्जर भूमि को हरे-भरे खेतों में परिवर्तन कर देती हैं।

इस बड़े मैदान की नदियों से जल के अतिरिक्त उपजाऊ मिट्टी भी मिला करती है। इस बड़े मैदान की भूमि चिकनी मिट्टी तथा रेत की बनी हुई है; यह दुमट खेती की उपज के लिए बहुत ही उत्तम वस्तु है। रेतीली मिट्टी की परत बड़ी गहराई तक पाई जाती है। इस बड़े मैदान के किसी-किसी भाग में ५०० फ़ीट से भी अधिक गहराई तक मिलती है। यह मिट्टी कहाँ से आई? सैकड़ों हज़ारों बरसों से ये नदियाँ पहाड़ की चट्टानों को तोड़-फोड़कर चिकनी मिट्टी और रेत बनाती रही हैं, जिसको इन्होंने बड़े मैदान में बिछा दिया है। नदियाँ मैदान में धीरे-धीरे बहती हैं, इसलिए उनके तलों और किनारों पर रेत और चिकनी मिट्टी बैठ जाती है। इस बड़े मैदान की भूमि बहुत चौरस है इसलिए यह नदियाँ अपने मार्ग बदला करती हैं; परन्तु रेत और चिकनी मिट्टी को अपने पीछे छोड़ जाती हैं। यह नदियाँ सैकड़ों तथा हज़ारों बरस से यही काम कर रही हैं और इस रीति से इन्होंने सारे बड़े मैदान में धीरे-धीरे रेत और चिकनी मिट्टी की एक बहुत मोटी परत बिछा दी है।

इस बड़े मैदान की भूमि खेती के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसमें जल भी बहुत है, इसलिए यह बड़ा मैदान बहुत ही उपजाऊ और घना बसा हुआ है।

दक्षिणी पहाड़ी देश—नक़शे में **नर्मदा** और **ताप्ती** नदियों को देखो जो खम्भात उपसागर में गिरती हैं। इन दोनों नदियों के बीच में **सतपुड़ा पर्वत** आ गया है। दक्षिणी पहाड़ी प्रान्त का जो भाग सतपुड़ा के उत्तर में है उसमें अलग-अलग

कई छोटी-छोटी पहाड़ियों के समूह हैं, जिनमें से **अरावली की पहाड़ियाँ** और **विन्ध्याचल** विशेष प्रसिद्ध हैं। चम्बल और सोन नदियों के बहाव से तुम देख सकते हो कि दक्षिणी पहाड़ी देश का उत्तरी भाग उत्तर की ओर ढालू है। दक्षिणी पहाड़ी देश का जो भाग सतपुड़ा के दक्षिण में है वह नदियों की घाटियों को छोड़कर समुद्र से डेढ़ हज़ार से तीन हज़ार फ़ीट तक ऊँचा है। देश के ऐसे विस्तृत भाग को जो समुद्र से चबूतरे के सदृश ऊँचा उठता है **पठार** कहते हैं। दक्षिणी पहाड़ी देश का जो भाग सतपुड़ा के दक्षिण में स्थित है और पश्चिमी और पूर्वी घाटों से घिरा हुआ है **दक्कन (दक्षिण) का पठार** कहलाता है। इसका अधिकांश भाग प्रायः कड़ी-कड़ी चट्टानों का बना है जिनके ऊपर मिट्टी की एक बहुत पतली परत है। उसमें घास को छोड़कर और कुछ नहीं होता। नदियों की घाटियाँ अवश्य उपजाऊ हैं क्योंकि उनकी भूमि में नदियों से लाई हुई रेत तथा चिकनी मिट्टी मिली होती है। दक्कन के भिन्न-भिन्न भागों में **काली मिट्टी**, जो कि रुई की उपज के लिए बहुत ही उपयोगी है, पाई जाती है। परन्तु दक्कन का अधिकांश भाग खेती के काम का नहीं है।

नक़्शे के देखने से तुमको विदित होगा कि पठार की बड़ी-बड़ी नदियाँ **महानदी**, **गोदावरी**, **कृष्णा** तथा **कावेरी** सब पूर्व की ओर बहती हैं। इससे प्रकट होता है कि यह पठार बङ्गाल के उपसागर की ओर ढालू है।

दक्कन में पानी की कमी है। यहाँ की भूमि बहुत कड़ी और

पथरीली है इसलिए कुएँ और नहरें खोदने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। यहाँ वर्षा भी कम होती है क्योंकि अरबसागर से जो हवाएँ उठती हैं उनको पश्चिमी घाट रोक देते हैं। निकम्मी भूमि, कम वर्षा और नहरें तथा कुएँ खोदने में कठिनाई होने के कारण यह देश उपजाऊ नहीं है। इसी लिए इसकी आबादी भी बहुत थोड़ी है और हिन्दुस्तान के और भागों की अपेक्षा यहाँ अकाल भी बहुत पड़ता है।

समुद्रतट के मैदान—पूर्वी तट का मैदान पूर्वी घाट और बंगाल उपसागर के बीच में स्थित है और पश्चिमी तट का मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच में है। इन मैदानों की भूमि खेती के लिए बहुत अच्छी है और यहाँ आस-पास के समुद्रों से नम हवा आकर पानी भी ख़ूब बरसाती है। यही कारण है कि यह दोनों मैदान अत्यन्त उपजाऊ और घने बसे हैं।

प्रश्नावली

१—हिन्दुस्तान किन-किन प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है ?

२—क्या कारण है कि बड़े मैदान में दकन की अपेक्षा अधिक कुएँ हैं ?

३—बड़े मैदान की अपेक्षा दकन में वर्षा क्यों कम होती है ?

४—बताओ, बड़े मैदान की भूमि कैसे बन गई है।

५—क्या कारण है कि दकन की अपेक्षा बड़ा मैदान अधिक घना बसा हुआ है ?

अभ्यास

हिन्दुस्तान के दिये हुए ख़ाके पर इन बड़े-बड़े पहाड़ों तथा नदियों के नाम चिह्न-सहित दिखाओ—

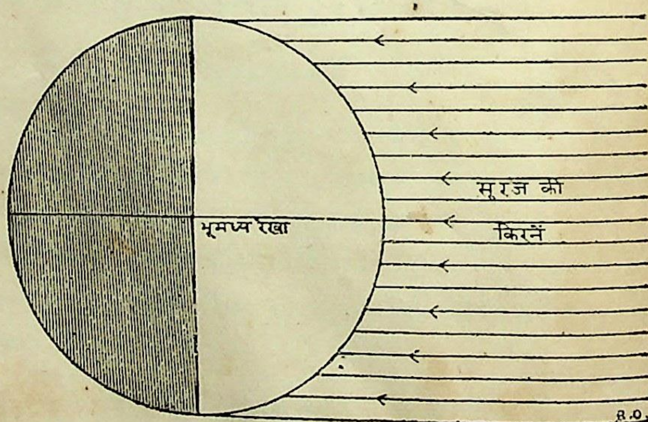
हिमालय की श्रेणी, कराकुरम की श्रेणी, हिन्दूकुश-श्रेणी, सुलेमान-श्रेणी, किरथर-श्रेणी, पटकोई-श्रेणी, सतपुड़ा पर्व्वत, अर्वली पहाड़ियाँ, विन्ध्याचल, पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट, नीलगिरि, सिन्ध, गङ्गा, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी।

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दुस्तान का जलवायु

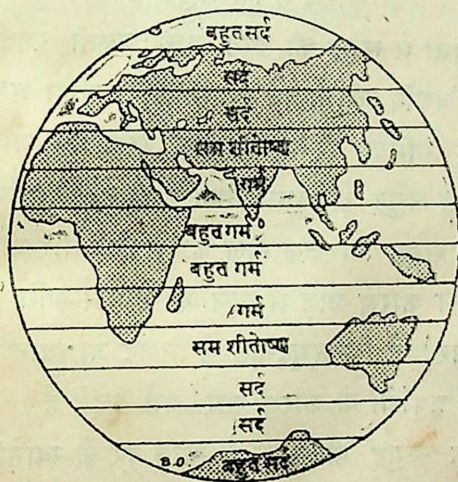
किसी स्थान का जलवायु (१) उस स्थान की भूमध्य रेखा से दूरी, (२) उसकी समुद्र से दूरी, (३) उसकी समुद्र के धरातल से उँचाई और (४) उसकी जलवृष्टि के परिमाण पर निर्भर है।

१—भूमध्यरेखा से दूरी—पृथ्वी के जो भाग भूमध्यरेखा के समीप हैं, सूर्य्य से अधिक गरमी पाते हैं और जो ध्रुवों के



समीप हैं उनको बहुत कम गरमी पहुँचती है। इससे जितना

दूर भूमध्यरेखा से कोई स्थान होता है उतनी ही कम गर्मी सूर्य्य से उसमें आती है। **यह क्यों होता है?** सूर्य्य की किरणें भूमध्यरेखा पर सीधी पड़ती हैं। परन्तु पृथ्वी गोल है इसलिए धरातल के और भागों पर किरणें तिरछी पड़ती हैं। भूमध्यरेखा से हम जितना अधिक उत्तर या दक्षिण की ओर आगे बढ़ते हैं, पृथ्वी के धरातल पर यह किरणें उतनी ही अधिक तिरछी पड़ती हैं। यही कारण है कि पृथ्वी का धरातल भूमध्य-



रेखा के पास अत्यन्त गर्म है। इससे आगे बढ़कर उत्तर या दक्षिण की ओर थोड़ी दूर तक हमको गर्म देश मिलते हैं। उससे आगे कुछ कम गर्म देश मिलते हैं, फिर कुछ ठंढे देश मिलते हैं। आगे

चलकर अधिक ठण्ढे देश मिलते हैं और अन्त में उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के समीप अत्यन्त ठण्ढे देश मिलते हैं। चूँकि हिन्दुस्तान भूमध्यरेखा से अधिक उत्तर की ओर नहीं है इसलिए यह देश गर्म है, और चूँकि हिन्दुस्तान का दक्षिणी भाग उत्तरी भाग की अपेक्षा भूमध्यरेखा के अधिक निकट है इसलिए यह उत्तरी भाग की अपेक्षा अधिक गर्म है।

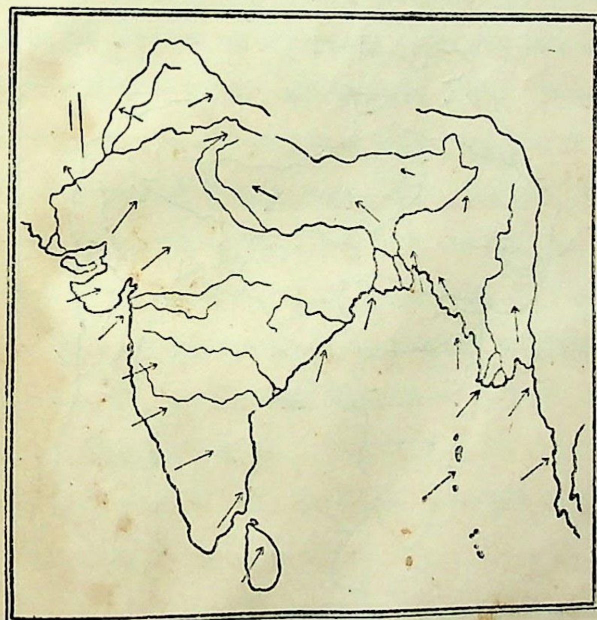
२—**समुद्र से दूरी**—समुद्र का जल स्थल की अपेक्षा अधिक समय में गर्म होता है, और इसलिए यह गरमी में अधिक ठंढा होता है। यही कारण है कि समुद्र के आस-पास के स्थानों में गर्मी के दिनों में समुद्र की ठण्ढी वायु चलती रहती है। हम देखते हैं कि यद्यपि इलाहाबाद मद्रास की अपेक्षा भूमध्यरेखा से दूर है परन्तु गर्मियों में यहाँ मद्रास से अधिक गर्मी पड़ती है क्योंकि मद्रास समुद्र के किनारे स्थित है और इलाहाबाद समुद्र से दूर है। समुद्र का जल स्थल की अपेक्षा धीरे-धीरे ठण्ढा भी होता है। इस कारण जाड़े में स्थल की अपेक्षा अधिक गर्म रहता है। यही कारण है कि समुद्र-तट के निकट जो स्थान हैं वह जाड़े में समुद्र की हवाओं के कारण कुछ गर्म रहते हैं। इससे हम देखते हैं कि समुद्र के पास के स्थान दूर के स्थानों की अपेक्षा गर्मी में अधिक ठण्ढे और जाड़े में अधिक गर्म रहते हैं क्योंकि समुद्र की हवायें गर्मी में किनारे के स्थानों को ठण्ढा और जाड़े में गर्म रखती हैं।

३—**समुद्र के धरातल से उँचाई**—जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते जाते हैं हमको वायु ठण्ढी मिलती जाती है। इस कारण जो

स्थान नीलगिरि पर्व्वत पर स्थित हैं वह बड़े मैदान के स्थानों की अपेक्षा अधिक ठण्ढे हैं, यद्यपि मैदान के देश पहाड़ी स्थानों की अपेक्षा भूमध्यरेखा से अधिक दूर हैं।

४—वर्षा—खेती की उपज वर्षा पर निर्भर है इसलिए हमको अधिक ध्यान से देखना चाहिए कि हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों में वर्षा किस प्रकार होती है।

बहुत-सी वर्षा हिन्दुस्तान में उस नमी के द्वारा होती है जो सूर्य आसपास के समुद्रों से खींच लेता है। भाप से भरी हुई



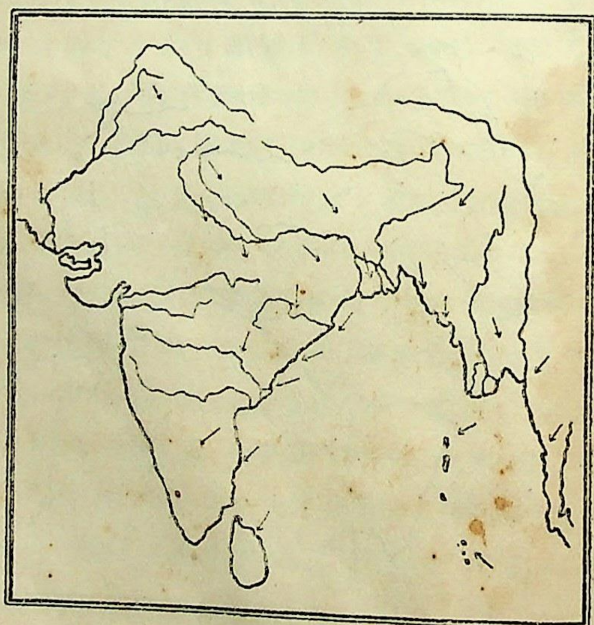
दक्षिण-पश्चिमी मानसून।

हवायें हिन्दुस्तान में वर्ष के विशेष समय में चला करती हैं।

इनमें से प्रधान हवा **दक्षिण-पश्चिमी मानसून** कहलाती है क्योंकि यह प्रायः दक्षिण-पश्चिम की ओर से चलती है। पिछले पृष्ठ के नक़शे में तीरों के चिह्न से दक्षिण-पश्चिमी मानसून की गति दिखाई गई है।

दक्षिण-पश्चिमी मानसुन जून, जूलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में चलती है।

यह हवायें सबसे पहले पश्चिमी घाट से टकराती हैं। यह उन पहाड़ों में से होकर नहीं जा सकतीं इसलिए उनके ढालों पर



उत्तर-पूर्वी मानसुन।

चढ़ने लगती हैं। इस प्रकार जब वह ठण्डी वायु में मिल जाती हैं,

जो इन पहाड़ों के ऊपर होती है, तो इन हवाओं से बहुत-सा जल गिर पड़ता है। यही कारण है कि पश्चिमी घाट पर अधिक जल बरसता है। जब यह हवायें पश्चिमी घाट के पार जाती हैं तो दकन के पठार के लिए इनमें बहुत कम जल रह जाता है, यही कारण है कि इस देश में बहुत कम पानी बरसता है।

तुम जानते हो कि पश्चिमी घाट सारे पश्चिमी तट पर नहीं फैले हुए हैं। खम्बायत की खाड़ी के उत्तर का देश चौरस है इसी लिए हवायें इस देश पर से होकर निकल जाती हैं और जब तक हिमालय पर नहीं पहुँचतीं, जल नहीं बरसातीं। यही कारण है कि सिन्ध नदी के मैदान में बड़े-बड़े मरुस्थल (रेगिस्तान) पाये जाते हैं।

दक्षिण-पश्चिमी मानसून का एक भाग बंगाल उपसागर से होकर जाता है। बंगाल उपसागर से चलकर यह हवा गंगा नदी की घाटी में पहुँचती है और यहाँ, और विशेषकर हिमालय पर्वत तथा उसकी पूर्वी शाखाओं पर, बहुत जल बरसाती है।

सितम्बर के महीने के पश्चात् हवायें उत्तर पूर्व की ओर से चलती हैं। इसलिए अब इनको **उत्तर-पूर्वी मानसून** कहते हैं। यह अक्टूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर के महीनों में चला करती और हिन्दुस्तान के दक्षिण-पूर्वी भागों में जल बरसाती हैं। पिछले पृष्ठ के नक़शे में तीरों के चिह्न से उत्तर-पूर्वी मानसून की दिशा दिखाई गई है।

प्रश्नावली

१—बताओ, कोई स्थान भूमध्यरेखा के समीप होने से क्यों अधिक गर्म होता है?

२—समुद्र से दूर के स्थल उसके निकट के स्थलों की अपेक्षा जाड़े के दिनों में अधिक ठण्ढे और गर्मी के दिनों में अधिक गर्म क्यों हो जाते हैं ?

३—हिन्दुस्तान की उस सँकरी भूमि पर, जो पश्चिमीघाट तथा समुद्र के बीच में स्थित है, दकन के पठार की अपेक्षा अधिक वर्षा क्यों होती है ?

४—बताओ कि समुद्र-तट के देश, जो सिन्ध के मुहाने और खम्बायत की खाड़ी के बीच में हैं, बहुत सूखे क्यों हैं ?

५—मलाबार और कोरोमण्डल-तटों पर सबसे अधिक वर्षा, वर्ष की भिन्न-भिन्न ऋतुओं में, क्यों होती है ?

अभ्यास

१—हिन्दुस्तान के दिये हुए ख़ाके पर तीरों के चिह्न से दक्षिण-पश्चिमी मानसून की दिशा दिखाओ ।

२—हिन्दुस्तान के दिये हुए ख़ाके पर तीरों के चिह्न से उत्तर-पूर्वी मानसून की दिशा दिखाओ ।

छठा अध्याय

हिन्दुस्तान की उपज

किसी देश की उपज वहाँ की भूमि की दशा और जलवायु पर निर्भर होती है। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमि तथा जलवायु हैं; इसी लिए यहाँ कई प्रकार की कृषि होती है। खेती ही इस देश के धनवान् होने का मूल कारण है। यहाँ के रहनेवालों के ८/१० भाग का जीवन इसी पर निर्भर है।

फ़सलें

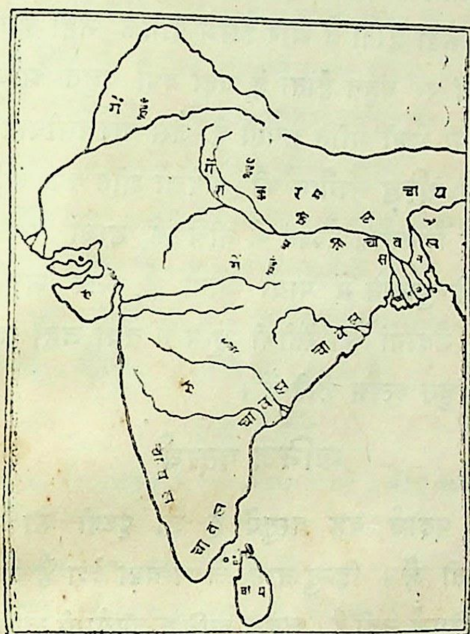
जौ, चना और **दाल** जिनके लिए जल की बहुत आवश्यकता नहीं है, हिन्दुस्तान भर में बोई जाती हैं; परन्तु विशेष कर दक्कन और सिन्ध नदी की घाटी के अधिक सूखे स्थानों में इनकी खेती होती है। **चावल** के लिए जल की बड़ी आवश्यकता होती है और यह ऐसे खेतों में बोया जाता है जिनमें जल भर जाय। इसको गर्मी की भी आवश्यकता है। इसलिए गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की घाटियों में पूर्व की ओर नदियों के डेल्टों और पश्चिमीतट के मैदानों में इसकी खेती अधिक होती है। **गेहूँ** को ठण्ढे और सूखे जलवायु की आवश्यकता होती है, इसलिए दक्कन के ऊँचे भागों में और गंगा और सिन्ध की घाटियों के ऊपरी भाग में बहुत होता है। **चाय** एक पौदे की सूखी पत्तियाँ हैं। यह पौदा ऐसी भूमि में

उगता है जहाँ अधिक जल हो, अधिक धूप हो और जल सुगमता से बह जाता हो। इसलिए चाय ब्रह्मपुत्र की घाटी के नीचे के भाग की पहाड़ियों, हिमालय के पूर्वी नीचे-नीचे ढालों और लङ्का के पहाड़ों के ढालों पर विशेष कर बोई जाती है।

गन्ना जिससे शक्कर बनती है, गङ्गा नदी की घाटी के ऊपर के भाग की अच्छी भूमि में अधिक उत्पन्न होता है।

ऊपर लिखी हुई वस्तु केवल खाने के लिए बोई जाती है। इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तान में और-और प्रकार की भी उपज होती है। **रुई** एक प्रकार का रेशा है जो **बिनौलों** के ऊपर लिपटा रहता है। रुई के पौदे को गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है और यह उस काली मिट्टी में, जो दक्कन और काठियावाड़ के प्रायद्वीप में पाई जाती है, अधिक होती है। **पाट** एक और बहुमूल्य पौदा है। इसके तने से एक प्रकार का रेशा निकलता है जिससे बोरियाँ बनाई जाती हैं। सन के पौदे को उपजाऊ भूमि और नम जलवायु की आवश्यकता है; इसलिए गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों के नीचे के भाग इसकी खेती के लिए अधिक उपयोगी हैं। **नील** और **अफ़ीम** गंगा नदी के उत्तर के मैदानों में बोई जाती हैं। ~~नील~~ अफीम बनारस के आसपास और ~~अफ़ीम~~ नील बिहार में उत्पन्न होती है। इन फ़सलों की खेती अब कम होती जा रही है। क्योंकि नील के बदले रासायनिक विधि से बना हुआ एक प्रकार का नीला रङ्ग प्रचलित हो रहा है और अफ़ीम की बिक्री चीन के देश में, जहाँ कि यह बहुत भेजी जाती थी, बन्द की जा रही है। यह वहाँ के रहनेवालों को बहुत हानि पहुँचाती थी।

तेलहन (जैसे अलसी, रेंड़ी इत्यादि) से तेल निकालते हैं। ज्वार और बाजरा तथा दालों की भाँति तेलहन भी हिन्दुस्तान के



हिन्दुस्तान की पैदावार।

बहुत से भागों में बोया जाता है। **तम्बाकू** एक पौदे का सूखा पत्ता होता है। इसकी भी खेती हिन्दुस्तान के लगभग सब प्रान्तों में होती है परन्तु विशेष कर गङ्गा नदी की घाटी के नीचे के भागों में और पूर्वी समुद्रतट के मैदान में कुछ स्थानों में अधिक बोई जाती है❀।

❀ इस अध्याय में जिन स्थानों का वर्णन किया गया है उनको अध्यापक तुम्हें नक़शे में दिखायेंगे।

पेड़

सबसे अधिक क़ीमती लकड़ी **सागौन** है। इस पेड़ की लकड़ी बहुत कड़ी होती है और इसमें दीमक नहीं लगती। यह ऐसी पहाड़ियों पर बहुत होता है जहाँ वर्षा बहुत अधिक होती है और धूप भी भली भाँति लगती है जैसे पश्चिमीघाट। **साल, देवदार** और **चीड़** सागौन की अपेक्षा शीत को अधिक सह सकते हैं; यह हिमालय पर्व्वत के नीचे के ढालों पर होते हैं। **बाँस** सारे हिन्दुस्तान में पाया जाता है, और **नारियल के पेड़** तटीय मैदानों की रेतीली भूमि में तथा जहाँ जल अधिक बरसता है, बहुत उत्पन्न होते हैं।

खनिज पदार्थ

खनिज पदार्थ वह वस्तुयें हैं जो पृथ्वी को खोद कर निकाली जाती हैं। हिन्दुस्तान जैसा बड़ा देश है वैसा खनिज पदार्थों से परिपूर्ण नहीं है। सबसे अधिक उपयोगी खनिज पदार्थ, जो किसी देश में होना चाहिए, पत्थर का **कोयला** है क्योंकि यह कोयला रेलगाड़ियों के चलानेवाले इंजिनों तथा कारख़ानों के चलानेवाले इंजिनों के लिए बहुत आवश्यक है। हिन्दुस्तान में इतना कोयला नहीं जो कि कुल हिन्दुस्तान के कारख़ानों को मिल सके, इसी लिए इस देश में कारख़ाने आदि कम हैं। यों तो कोयला मध्यप्रदेश और हैदराबाद में भी पाया जाता है परन्तु सबसे उत्तम कोयले की खानें बंगाल में हैं। बंगाल में कोयलों की खानों के पास लोहे की भी खानें हैं, जिनमें से **कच्चा लोहा**

निकालकर स्वच्छ किया जाता है। लोहे की खानें हिन्दुस्तान के और भागों में भी पाई जाती हैं, परन्तु अधिकतर यह बङ्गाल ही की खानों में से निकाला जाता है क्योंकि पास ही कोयला पाया जाता है जो लोहे के स्वच्छ करने में काम आता है।

नमक एक अत्यन्त उपयोगी खनिज पदार्थ है। यह समुद्र-तट के निकट समुद्र के खारी पानी से और राजपुताने की **साँभर झील** से मिलता है। यह सिन्ध नदी के पास **नमक के पहाड़** से भी निकाला जाता है। खनिज पदार्थों में सोना सबसे ज्यादा क़ीमती है। और देशों की अपेक्षा हिन्दुस्तान में बहुत कम सोना पाया जाता है। **मैसूर** में सोने की खानें हैं।

प्रश्नावली

१—बताओ हिन्दुस्तान के किन-किन भागों में और क्यों निम्नलिखित उपज होती हैं—

गेहूँ, सागौन, चाय, रुई, और चावल।

२—बताओ हिन्दुस्तान में कारख़ाने क्यों कम हैं।

३—हिन्दुस्तान में अफ़ीम की खेती क्यों कम होती जा रही है?

४—बताओ लोहे की खानों के पास कोयले की खानें होने से बंगाल को क्या लाभ है?

५—उन चीज़ों को बताओ जो हिन्दुस्तान के प्रायः सब प्रान्तों में बोई जाती हैं।

अभ्यास

हिन्दुस्तान के दिये हुए ख़ाके पर उन स्थानों को दिखाओ जहां नीचे दिये हुए पदार्थ अधिक बोये जाते हैं—

गेहूँ, चावल, चाय, रुई, गन्ना, सन, अफ़ीम और नील।

———

सातवाँ अध्याय

सूबे और बड़ी-बड़ी रियासतें

राज्यप्रबन्ध के लिए हिन्दुस्तान **सूबों** और **देशी रियासतों** में विभाजित किया गया है। सूबों में तो ब्रिटिश गवर्नमेंट स्वयं राज्य करती है; परन्तु देशी रियासतें अपने-अपने राजाओं के अधीन हैं, जो अपने-अपने राज्यप्रबन्ध के लिए वाइसराय महोदय से सम्मति लेते रहते हैं। ये सब रियासतें ब्रिटिश गवर्नमेंट से संरक्षित हैं—

हिन्दुस्तान के **बड़े सूबे** ये हैं—

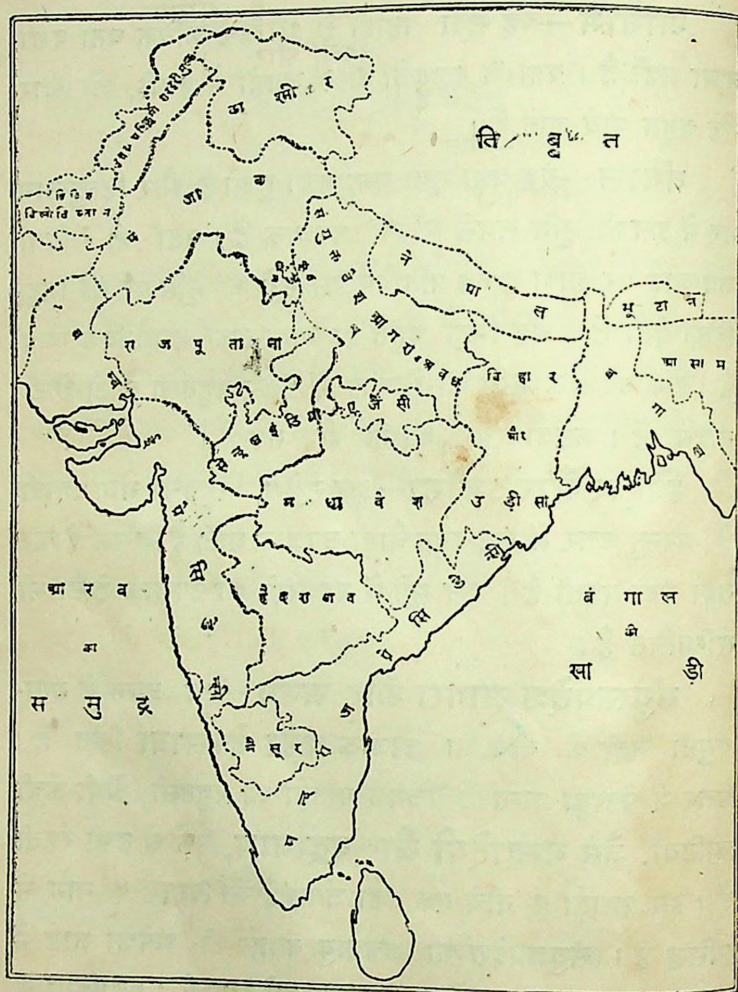
उत्तर-पूर्व में......	१ आसाम
	२ बंगाल
	३ बिहार और उड़ीसा
उत्तर में...........	४ संयुक्तप्रदेश आगरा और अवध
उत्तर-पश्चिम में......	५ देहली प्रदेश
	६ पञ्जाब
	७ उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश
	८ ब्रिटिश बिलोचिस्तान
पश्चिम में..........	९ बम्बई प्रदेश
मध्य में...........	१० मध्यप्रदेश
पूर्व और दक्षिण में...	११ मद्रास प्रदेश

आसाम—यह सूबा पहाड़ी है इसलिए अधिक घना बसा हुआ नहीं है। यहाँ के दलदलों और जंगलों में हाथी, शेर और गैंडे बहुत पाये जाते हैं।

बंगाल—यह बड़ा सूबा घना बसा हुआ है और हिन्दुस्तान भर में इसकी भूमि सबसे अधिक उपजाऊ है। यहाँ की नदियाँ जब बाढ़ पर होती हैं तब प्रति वर्ष इस सूबे की भूमि पर नई मिट्टी बिछा देती हैं। यह मिट्टी बहुत ही उत्तम तथा स्वाभाविक खाद है। इस उपज़ाऊ भूमि की सिचाई के लिए बहुतसी छोटी-छोटी नदियाँ हैं। जलवायु यहाँ का गर्म और नम है।

बिहार और उड़ीसा—इस सूबे का बहुतसा भाग पहाड़ी है। परन्तु उत्तर में एक बहुत चौड़ी उपजाऊ घाटी है जिसमें होकर गङ्गा नदी बहती है। इस सूबे में महानदी का उपजाऊ डेल्टा भी सम्मिलित है।

संयुक्तप्रदेश आगरा और अवध—इस प्रान्त में गंगा-यमुना नदी के बीच का उपजाऊ **बड़ा दोआबा** स्थित है। उत्तर में पहाड़ी प्रान्त हैं जिनके पहाड़ों की बहुतसी ऊँची-ऊँची चोटियाँ, जैसे **नन्दादेवी और बद्रीनाथ,** बर्फ़ से ढकी रहती हैं। इन पहाड़ों के नीचे एक बड़ा जंगल है जो **तराई** के नाम से प्रसिद्ध है। संयुक्तप्रदेश का जलवायु बंगाल की अपेक्षा जाड़े में अधिक ठण्डा, और गर्मियों में अधिक गर्म होता है। पहाड़ियों के निकट वर्षा बहुत होती है, और पश्चिमी प्रान्तों की अपेक्षा पूर्वी प्रान्तों में अधिक होती है। पश्चिमी प्रान्तों की अपेक्षा पूर्वी प्रान्तों में पानी अधिक बरसने का कारण यह है कि बङ्गाल उपसागर से



हिन्दुस्तान के सूबे और बड़ी-बड़ी रियासतें।

जो मानसून हवा चलती है वह गंगा की घाटी में बहती है। संयुक्तप्रदेश के लगभग ३/४ भाग में खेती का काम होता है।

देहली प्रदेश—दिसम्बर सन् १९११ ई० के बड़े दरबार में, जो देहली में हुआ था, हमारे श्रीमान् राज-राजेश्वर जार्ज पंचम ने देहली को अपने हिन्दुस्तान के राज्य की राजधानी नियत किया था। दूसरे वर्ष देहली का नगर और उसके आसपास के छोटे-छोटे गाँव लेकर देहली का नया प्रदेश बनाया गया।

पंजाब—यह प्रदेश प्रायः उस चौरस मैदान का बना हुआ है जिस पर सिन्ध और उसकी पाँच सहायक नदियाँ बहती हैं। यहाँ का जलवायु गर्मी में गर्म और जाड़े में ठण्ढा रहता है। चूँकि यहाँ जल कम बरसता है इसलिए किसान अपने खेतों को सींचने के लिए नहरों से पानी लेते हैं जो नदियों से खेतों तक पानी पहुँचाती हैं। इन नहरों ने यहाँ की रेतीली बंजर भूमि को हरे-भरे खेतों में परिवर्तित कर दिया है।

उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश तथा **ब्रिटिश बिलोचिस्तान**—यह दोनों प्रदेश पहाड़ी हैं। हिन्दुस्तान को उत्तर-पश्चिम की ओर के आक्रमणों से बचाने के लिए यह देश ब्रिटिश राज्य का एक सूबा बनाया गया है। दोनों सूबे मानसून हवाओं के मार्ग से बाहर पड़ते हैं इसलिए प्रायः सूखे और कम बसे हुए हैं।

बम्बई प्रदेश—यह प्रदेश समुद्र के पश्चिमी तट के बराबर-बराबर दूर तक फैला हुआ है। इसका सबसे उत्तरी भाग **सिन्ध** का रेगिस्तान है जिसमें सिन्ध नदी का वह भाग बहता है जो उसके मुहाने के पास है। इसके दक्षिण में **गुजरात** है जहाँ रुई

बहुत होती है। पश्चिमी घाट के पश्चिम में समुद्र के किनारे का उपजाऊ मैदान है। पश्चिमी घाट के पूर्व में **बम्बई** का दकन स्थित है; यह देश प्रायः सूखा है क्योंकि पश्चिमी घाट मानसून हवाओं को रोक लेते हैं।

मध्यप्रदेश—यह सूबा प्रायः ऊँची भूमि पर बसा हुआ है। इसके पश्चिमी प्रान्तों में वह मिट्टी पाई जाती है जो रुई की खेती के लिए उपयोगी है। इसका पूर्वी भाग वन और जंगलों से भरा हुआ है। रुई के प्रान्तों और नदी की घाटियों को छोड़कर बाक़ी सूबे में बहुत कम खेती होती है।

मद्रास प्रदेश—इस प्रदेश में दकन के पठार के बहुतसे भाग के अतिरिक्त बम्बई प्रदेश के दक्षिण की ओर का पश्चिमी तटीय मैदान और कुमारी अन्तरीप से उत्तर की ओर का पूर्वी तटीय मैदान सम्मिलित हैं।

हिन्दुस्तान की बड़ी-बड़ी देशी रियासतें **हैदराबाद, मैसूर, राजपूताने की रियासतें, सेंट्रल इंडिया एजन्सी** और **कश्मीर** हैं।

हैदराबाद—यह एक बड़ी रियासत है जो दकन के मध्य में स्थित है। यह निज़ाम के अधीन है। यह लगभग १००० फुट ऊँचे पठार के ऊपर बसी हुई है।

मैसूर की रियासत हैदराबाद के दक्षिण, पूर्वी और पश्चिमी घाटों के बीच में स्थित है। यह देश पहाड़ी है और यहाँ वर्षा भी अधिक होती है।

राजपूताना में लगभग २० रियासतें हैं जिनमें उदयपुर,

जोधपुर और जयपुर बड़ी-बड़ी हैं। अरवली पर्वत ने इस देश को दो भागों में विभाजित कर दिया है। जो भाग अरवली पर्वत के उत्तर-पश्चिम की ओर है उसमें जल बहुत कम बरसता है और बहुधा अकाल पड़ते हैं। परन्तु जो इसके दक्षिण-पूर्व की ओर है वह बहुत उपजाऊ है, और उसमें जल-वृष्टि भी अधिक होती है।

सेंट्रल इंडिया एजन्सी—इसमें वह रियासतें सम्मिलित हैं जो विन्ध्याचल पहाड़ और यमुना नदी की घाटी के बीच में स्थित हैं। **ग्वालियर, इन्दौर** और **भूपाल** इनमें बड़ी-बड़ी रियासतें हैं।

कश्मीर—यह रियासत बहुत अधिक पहाड़ी है। इसकी सबसे अधिक चौड़ी घाटी, जो कश्मीर की घाटी के नाम से प्रसिद्ध है और जिसमें से होकर झेलम नदी बहती है, पृथ्वी के अत्यन्त सुन्दर स्थानों में गिनी जाती है।

प्रश्नावली

१—हिन्दुस्तान के सूबों के नाम लो और उनकी स्थिति भी संक्षेप रीति से बताओ।

२—संयुक्तप्रदेश में दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में और पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में वर्षा क्यों अधिक होती है?

३—बम्बई प्रदेश के ऐसे भाग का नाम बताओ (१) जहाँ वर्षा बहुत कम होती हो, (२) जहाँ वर्षा बहुत अधिक होती हो और यह भी बताओ कि एक स्थान में बहुत कम और दूसरे में बहुत अधिक वर्षा क्यों होती है।

४—सेंट्रल इंडिया एजन्सी की स्थिति का वर्णन करो और इसकी बड़ी-बड़ी रियासतों में से कुछ के नाम भी बताओ।

४—निम्नलिखित क्या हैं और कहाँ हैं:—तराई, गुजरात, कश्मीर, ब्रिटिश बिलोचिस्तान, नन्दादेवी और बड़ा दोआबा ।

अभ्यास

हिन्दुस्तान के एक ख़ाके पर सूबों और नीचे लिखी हुई रियासतों के नाम और स्थान दिखाओ:—

हैदराबाद, मैसूर, राजपूताना, सेंट्रल इंडिया एजन्सी, कश्मीर ।

———

आठवाँ अध्याय

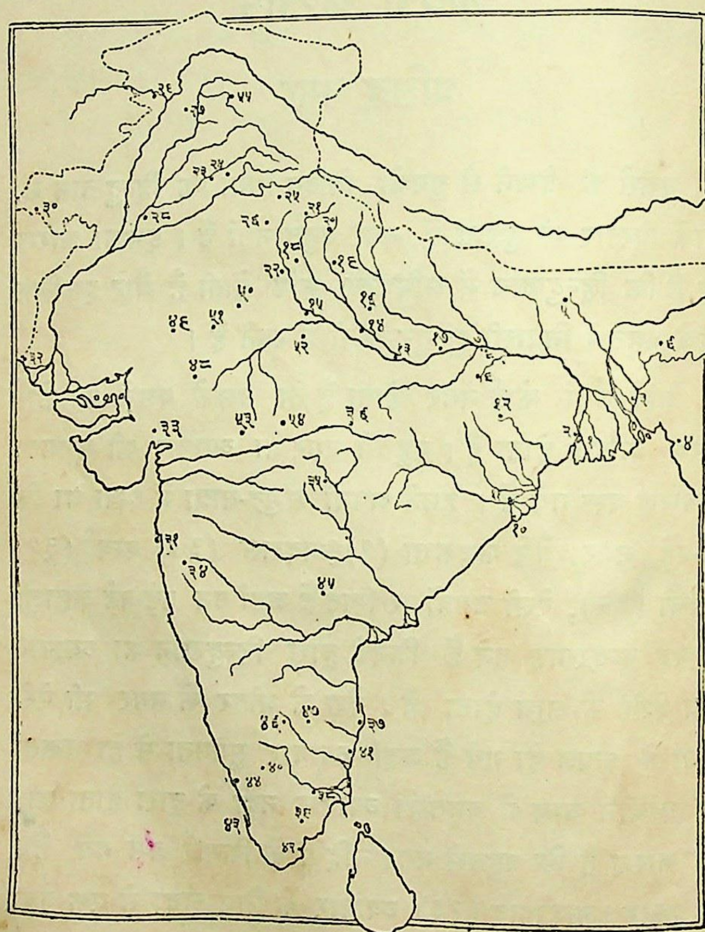
प्रसिद्ध नगर

नक़शे के देखने से तुमको विदित होगा कि हिन्दुस्तान में, उसके विस्तार की तुलना में, नगर बहुत नहीं हैं। इसका कारण यह है कि हिन्दुस्तान में अधिकतर कृषि होती है और इसलिए इसके बहुतसे निवासी दूर-दूर गाँवों में रहते हैं।

जहाँ कहीं कोई नगर होता है तो उसके बसने का कोई कारण अवश्य होता है। बहुतसे नगर तो व्यापार की सुगमता के कारण बस गये हैं। हमने अपनी समुद्र-यात्रा में देखा था कि बड़े-बड़े नगर, जैसे कलकत्ता (१)*मदरास (३७) बम्बई (३१) कराँची (३२), ऐसी जगहों पर स्थित हैं जहाँ उन बड़े-बड़े जहाज़ों के लिए बन्दरगाह बने हैं जिनके द्वारा हिन्दुस्तान का व्यापार अन्य देशों के साथ होता है। देश के भीतर के नगर भी ऐसे स्थानों में उत्पन्न हो गये हैं जहाँ व्यापार सुगमता से हो सकता है। प्राचीन काल में बहुतसा व्यापार नदी के द्वारा होता था, यही कारण है कि बहुतसे नगर नदियों के किनारे बस गये हैं। इस प्रकार इलाहाबाद (१३) व्यापार के लिए सदा से एक बड़ा

---

* प्रत्येक नगर के नाम के पश्चात् नम्बर लगा दिया है जिससे छपे हुए नक़शे में उसकी जगह मिल सके।



केन्द्र रहा है, क्योंकि यह गंगा और यमुना के संगम पर बसा हुआ है।

पक्की सड़कों के द्वारा भी व्यापार होता है; जैसे **पेशावर** (२८) इस कारण आबाद होगया है कि यहीं से क़ाफ़िले, जो हिन्दुस्तान से अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते हैं, चलते हैं। वर्तमान काल में व्यापारिक माल बहुतसा रेल के द्वारा चलता है। इस प्रकार यदि कोई नगर, जैसे जबलपुर (३६), रेलों का केन्द्र है तो वह नगर व्यापार की मण्डी होने के कारण उस समय की अपेक्षा जब कि माल केवल नदी या सड़क-द्वारा आता-जाता था अधिक प्रसिद्ध हो गया है।

प्राचीन काल में इस देश के भिन्न-भिन्न भागों के राजा अपनी राजधानियों के लिए ऐसे स्थान नियत करते थे जहाँ पर दृढ़ दुर्ग बना सकें और जहाँ से कि वह अपने देश को शत्रुओं से बचा सकें। हिन्दुस्तान में ऐसे बहुतसे नगर हैं जो पहले किसी समय में राजाओं की राजधानी थे। इन नगरों में राजाओं की दरबार-सम्बन्धी वस्तुएँ जैसे कारचोबी का काम, चाँदी, लकड़ी इत्यादि पर खोदाई के काम अभी तक होते हैं। अब इन कारीगरियों का वैसा आदर नहीं है जैसा प्राचीन काल में था।

हिन्दुस्तान के बहुतसे भागों में पवित्र स्थानों के आस-पास बहुतसे नगर बस गये हैं, जैसे बिहार में **गया** (९) है। इन स्थानों में बहुतसे यात्री आते हैं इसलिए इनके पास यात्रियों से व्यापार करने के लिए व्यापारी लोग बस गये हैं।

अब हम हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध नगरों का संक्षेप रीति से वर्णन करेंगे।

बंगाल—कलकत्ता (१) हुगली नदी के बायें किनारे पर हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा नगर है। यह बंगाल की राजधानी है और यहाँ हाईकोर्ट तथा यूनीवर्सिटी भी है। व्यापार के कारण यह नगर धन और विस्तार में बहुत उन्नति कर गया है। चूँकि गंगा नदी की वादी की उपज रेल और नदी-द्वारा कलकत्ते तक सुगमता से लाई जा सकती है, और बंगाल की कोयले की खानें भी यहाँ से बहुत दूर नहीं हैं इसलिए यहाँ बहुत कारख़ाने हैं। इनमें से बड़े-बड़े कारख़ाने सन (जिनमें सन को बुनकर बोरियाँ बनाई जाती हैं) काग़ज़, शक्कर और लोहे के हैं। जहाज़-सम्बन्धी व्यापार के लिए भी कलकत्ता बड़ी मण्डी है क्योंकि गंगा की उपजाऊ घाटी की उपज यहाँ से बाहर भेजी जाती है। **हवड़ा** (२) हुगली नदी के दूसरे किनारे पर कलकत्ते के सम्मुख स्थित है। यह जहाज़-सम्बन्धी व्यापार और कारख़ानों के कारण, जो कलकत्ते के सदृश हैं, एक छोटे गाँव से बड़ा नगर हो गया है। **ढाका** (३) एक ऐसे उपजाऊ प्रान्त के मध्य में स्थित है जहाँ पाट और तेलहन अधिक उत्पन्न होते हैं; यही कारण है कि इसका व्यापार बराबर उन्नति करता जा रहा है। किसी समय यह मुसलमान बादशाहों की राजधानी था, और इसलिए बहुत बढ़िया बारीक मलमल बुनने के लिए प्रसिद्ध हो गया था, जो दरबारियों के हाथ बहुत बिकती थी। इस शिल्प का काम वहाँ अब तक प्रचलित है। **चटगाँव** (४) बहुत उत्तम बन्दरगाह है।

यह नगर प्रति दिन उन्नति कर रहा है क्योंकि पूर्वी बंगाल और आसाम की उपज यहीं से समुद्री मार्ग-द्वारा बाहर भेजी जाती है। **दारजिलिंग** (५) हिमालय पर्वत में समुद्र के धरातल से ७००० फ़ुट की उँचाई पर स्थित है और बंगाल के सूबे का एक मनोहर पहाड़ी स्थान है; गर्मी के दिनों में बंगाल-सरकार का यह निवास-स्थान है।

आसाम—यहाँ कोई बड़ा नगर नहीं है क्योंकि यहाँ के लोग घाटियों में दूर-दूर के गाँवों में फैले हुए हैं या चाय के बाग़ों और जंगलों में काम करते हैं। आसाम की राजधानी **शिलांग** (६) है जो समुद्र के धरातल से लगभग ५००० फ़ुट की उँचाई पर स्थित है।

बिहार और उड़ीसा—बाँकीपुर (७) सूबे की गवर्न-मेन्ट का मुख्य स्थान है। यह नगर वास्तव में **पटना** (८) का वह भाग है जिसमें अँगरेज़ रहते हैं। पटना गङ्गा नदी पर है और इसलिए यह किसी समय, जब कि माल नदियों-द्वारा बहुत आता जाता था, एक बहुत बड़ा व्यापारिक स्थान था। अब चूँकि माल प्रायः नदियों की अपेक्षा रेलगाड़ियों-द्वारा बहुत आता-जाता है, इसलिए पटने का व्यापार पहले से बहुत कम हो गया है। यहाँ हाईकोर्ट और यूनीवर्सिटी भी हैं। **गया** (९) हिन्दुओं का पवित्र नगर है। इसके निकट आसपास के गाँवों में बहुतसे पवित्र स्थान हैं। हिन्दुओं का एक और पवित्र नगर **पुरी** (१०) है जहाँ पर जगन्नाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। चूँकि पुरी समुद्र के किनारे पर स्थित है इसलिए आजकल यहाँ बहुत

रोगी अपने स्वास्थ्य के लिए जाया करते हैं। **कटक** (११) महानदी के उपजाऊ डेल्टा की बड़ी मण्डी है। **राँची** (१२), जो कि सूबे के पहाड़ी भाग में स्थित है, यहाँ की गवर्नमेंट का ग्रीष्म ऋतु में रहने का मुख्य स्थान है।

संयुक्तप्रदेश—इलाहाबाद (१३) यहाँ की राजधानी है। रेलों के चलने से पहले यह बहुत प्रसिद्ध नगर था क्योंकि यह गंगा-यमुना के संगम पर स्थित है। यहाँ व्यापार की एक बड़ी मण्डी थी। चूँकि यह रेलों का जंकशन है इसलिए यहाँ इस समय भी व्यापार की वैसी ही बड़ी मंडी है जैसी कि पहले थी। गंगा और यमुना का संगम हिन्दुओं के लिए पवित्र स्थान है इसलिए इलाहाबाद एक बहुत प्रसिद्ध तीर्थस्थान भी है। इसके अतिरिक्त यहाँ हाईकोर्ट और यूनीवर्सिटी भी हैं। **कानपुर** (१४) हिन्दुस्तान के थोड़ेसे नगरों में से एक ऐसा नगर है जिसमें बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। यहाँ अधिकतर चमड़े की चीज़ें (जैसे जूते और ज़ीन) और सूती और ऊनी कपड़े बनते हैं। कानपुर कई रेलों का जंकशन है, इसलिए यहाँ से माल हिन्दुस्तान के सब भागों में सुगमता से भेजा जा सकता है।

संयुक्तप्रदेश में ऐसे नगर भी हैं जो प्राचीन काल में राजधानी थे। **आगरा** (१५), जो यमुना नदी पर है, किसी समय मुग़ल बादशाहों की राजधानी था। इस कारण इसमें बहुत अच्छी-अच्छी इमारतें हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध "ताजमहल" है जिसको शाहजहाँ बादशाह ने बनवाया था। इसकी गिनती दुनिया भर की सबसे सुन्दर इमारतों में होती है। आजकल आगरा इसलिए उन्नति कर

गया है कि यह रेलों का एक बड़ा केन्द्र और एक उपजाऊ प्रान्त की मण्डी है। **लखनऊ** (१६) अवध के नवाबों की राजधानी था। यहाँ अनेक प्रकार के शिल्प, जैसे चाँदी और चिकन आदि के काम जिनकी माँग दरबारियों में बहुत हुआ करती थी, अभी तक प्रचलित हैं। लखनऊ संयुक्तप्रदेश के बड़े-बड़े नगरों से रेल-द्वारा मिला हुआ है और इसलिए यह व्यापार की बड़ी मण्डी है। यहाँ यूनीवर्सिटी भी है।

संयुक्तप्रदेश में कुछ ऐसे नगर भी हैं जो हिन्दुस्तान में बहुत पवित्र गिने जाते हैं, इनमें **बनारस** (१७) सबसे बड़ा है और यह हिन्दू-धर्म और संस्कृत-विद्या का केन्द्र है। गंगा नदी के बायें किनारे पर बहुतसे मन्दिर बने हुए हैं जहाँ कि हिन्दुस्तान के सब भागों से हज़ारों यात्री आते हैं। हिन्दू विश्व-विद्यालय के कारण इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। **बनारस** एक उपजाऊ प्रान्त की मण्डी भी है।

संयुक्तप्रदेश में सेनाओं के लिए प्रसिद्ध छावनियाँ **मेरठ** (१८) और **बरेली** (१९) हैं। यहाँ के बड़े-बड़े स्वास्थ्यकर पहाड़ी स्थान **नैनीताल** (२०) और **मंसूरी** (२१) हैं। नैनीताल सूबे की गवर्नमेन्ट का ग्रीष्म ऋतु में रहने का स्थान है।

देहली का सूबा—यह सूबा इसलिए प्रसिद्ध है कि इसमें **देहली** (२२) का नगर सम्मिलित है जो हिन्दुस्तान की राजधानी है। सन् १९११ ई० के बड़े दरबार में हमारे सम्राट् ने इसको हिन्दुस्तान के राज्य की राजधानी नियत किया था। पहले किसी समय में यह मुग़ल राज्य की राजधानी था और इसलिए इसमें

अभी तक कई अच्छी इमारतें पाई जाती हैं। यहाँ प्राचीन बादशाही समय की पुरानी कारीगरियाँ, जैसे बुनने और धातु के काम आदि, इस समय भी प्रचलित हैं। देहली से कई रेलों की सड़कें भिन्न-भिन्न प्रान्तों को जाती हैं, इसलिए यह नगर व्यापार की बहुत बड़ी मण्डी भी है।

पंजाब—लाहौर (२३) पंजाब की राजधानी है। यहाँ हाईकोर्ट और पंजाब यूनीवर्सिटी भी है। **अमृतसर** (२४), जो रावी और व्यास के बीच में है, ऊनी कपड़ों और दुशालों की बहुत बड़ी मण्डी है। सिक्खमत का यह प्रधान केन्द्र है। **शिमला** (२५) पंजाब का प्रसिद्ध स्वास्थ्यकर पहाड़ी स्थान है। यह वाइसराय साहिब के और पंजाब के गवर्नर के, गर्मी की ऋतु में, रहने का स्थान है। सतलज और यमुना नदियों के बीच **अम्बाला** (२६), सिन्ध और झेलम के बीच **रावलपिण्डी** (२७) और **मुलतान** (२८) पंजाब की प्रधान छावनियाँ हैं; मुलतान में व्यापार की एक बड़ी मण्डी भी है।

उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश तथा ब्रिटिश बिलूचिस्तान—इनमें बहुत कम नगर हैं क्योंकि बस्ती बहुत कम है। उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश का मुख्य नगर **पेशावर** (२९) है जो सदा से व्यापार की बड़ी मण्डी रहा है क्योंकि यह ऐसे रास्ते पर स्थित है जहाँ से क़ाफ़िले ख़ैबर की घाटी में होकर हिन्दुस्तान से अफ़ग़ानिस्तान को जाते हैं। पश्चिमोत्तर के आक्रमण से हिन्दुस्तान को बचाने के लिए पेशावर में सेनाएँ रहती हैं। **क्वेटा** (३०) भी ब्रिटिश बिलूचिस्तान में ऐसी ही एक बड़ी भारी छावनी है। यह

दोनों नगर सारे पंजाब से रेलों द्वारा मिले हुए हैं ताकि जब आवश्यकता हो तब और-और छावनियों से सेनाएँ शीघ्रता से वहाँ भेजी जा सकें।

बम्बई का सूबा—बम्बई (३१) इस सूबे की राजधानी है और, जैसा कि तुम पढ़ चुके हो, यह एक बड़ा बन्दरगाह है और कलकत्ते की अपेक्षा हिन्दुस्तान के भीतरी भागों के अधिक निकट है। परन्तु रेलों के चलने से पहले कलकत्ते की अपेक्षा यहाँ बहुत कम व्यापार होता था क्योंकि पश्चिमी घाट के कारण बम्बई और देश के भीतरी नगरों के बीच आने-जाने में बहुत कठिनाई होती थी। जब से बम्बई का रेलों-द्वारा इन स्थानों से सम्बन्ध हो गया है, इसका व्यापार बहुत बढ़ गया है। हमने यह भी पढ़ा था कि बम्बई हिन्दुस्तान के उन प्रान्तों के सन्निकट है जो रुई की खेती के लिए प्रसिद्ध हैं। इसी कारण इस नगर में रुई के बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। यहाँ हाईकोर्ट और यूनिवर्सिटी है। **कराँची** (३२), जो पंजाब से बाहर गेहूँ भेजने के लिए बड़ा बन्दरगाह है, इसी सूबे में स्थित है। बम्बई के सदृश, देश के भीतरी स्थानों से रेल-द्वारा सम्बन्ध हो जाने से यह बड़ा नगर हो गया है। पहले समय में उत्तरी हिन्दुस्तान के उपजाऊ भाग से बंजर देशों में होकर कराँची तक व्यापारी माल को ले जाने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। यद्यपि यह बम्बई के सदृश अच्छा बन्दरगाह तो नहीं है तथापि इस बात में बम्बई से बढ़ा हुआ अवश्य है कि यूरुप के अधिक निकट है।

अहमदाबाद (३३) गुजरात में है। यह प्राचीन मुसलमान

बादशाहों की राजधानी था। यही कारण है कि हम देखते हैं कि प्राचीन बादशाही समय की सब कारीगरियाँ, जैसे बुनने और धातु के काम आदि, अब तक वहाँ प्रचलित हैं। वर्तमान काल में इसकी उन्नति का कारण यह है कि इसके आसपास के स्थानों में रुई बहुत पैदा होती है और इसलिए यहाँ रुई के कई बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। एक और पुराना नगर **पूना** (३४) है जो प्राचीन काल में मरहठे राजाओं की राजधानी था; अब यह एक प्रसिद्ध छावनी है और वर्षा ऋतु में बम्बई गवर्नमेन्ट के रहने का स्थान है।

मध्यप्रदेश—यहाँ बहुत कम नगर हैं क्योंकि उपजाऊ भूमि न होने से इसमें बस्ती बहुत कम है। **नागपुर** (३५) इसकी राजधानी है जो बम्बई से कलकत्ते तक जानेवाली रेल की सड़क पर स्थित होने के कारण प्रति दिन उन्नति कर रहा है। **जबलपुर** (३६) एक और नगर है जो रेलों का केन्द्र होने के कारण बड़ा व्यापारी नगर हो गया है।

मद्रास का सूबा—यहाँ की राजधानी **मद्रास** (३७) है। हम देख चुके हैं कि यह पूर्वी तट पर बड़ा बन्दरगाह है। यह कलकत्ते की तरह व्यापारी बन्दरगाह नहीं है क्योंकि इसके पास गंगा की घाटी के सदृश कोई उपजाऊ देश नहीं। इसके अतिरिक्त दक्षिणी तट पर बहुतसे और छोटे-छोटे बन्दरगाह हैं जिनसे इसको व्यापार के लिए मुक़ाबला करना पड़ता है। यहाँ बहुतसे बड़े-बड़े कारख़ाने भी नहीं हैं। परन्तु यह रेलों का प्रसिद्ध केन्द्र है और यहाँ हाईकोर्ट और मद्रास यूनीवर्सिटी है। **त्रिचिनापली** (३८) कावेरी के डेल्टा पर जवाहिरात और चुरटों के कारख़ानों

के लिए प्रसिद्ध है। **मदूरा** (३९) बहुतसे सुन्दर मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। **उटकमण्ड** (४०) नीलगिरि पर मद्रास सरकार के, गर्मी की ऋतु में, रहने का स्थान है। मद्रास को छोड़कर तट के और बड़े-बड़े नगर **पाण्डीचेरी** (४१), जो फ़्रांसीसियों के अधिकार में है, **तूतीकोरन** (४२), **कोचीन** (४३) और **कालीकट** (४४) हैं, परन्तु इनमें से किसी स्थान में भी ऐसा बन्दरगाह नहां जहाँ बड़े-बड़े जहाज़ रह सकें।

देशी रियासतें—रियासत हैदराबाद की राजधानी **हैदराबाद** (४५) है जो हिन्दुस्तान के भीतरी नगरों में सबसे अधिक घना बसा हुआ है। **बंगलौर** (४६) मैसूर की राजधानी है, और यह चूँकि दकन के पठार के एक ऊँचे भाग पर स्थित है इसलिए यहाँ का जलवायु स्वास्थ्यकर है। **कोलार** (४७) बंगलौर के पूर्व में सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध है। **राजपुताने की रियासतें** अपनी-अपनी राजधानियों के नाम से प्रसिद्ध हैं, जैसे **उदयपुर** (४८), **जोधपुर** (४९) और **जयपुर** (५०)। प्राचीन काल में इन नगरों में बड़े-बड़े क़िले थे। अब यह व्यापारी नगर हैं। जयपुर इनमें सबसे बड़ा है और इसमें बहुतसी अच्छी इमारतें हैं। **अजमेर** (५१) ब्रिटिश एजन्ट के रहने का स्थान है। इसका प्रबन्ध स्वयं वाइसराय के अधीन है। सेंट्रल इंडिया एजन्सी में बड़े-बड़े नगर **ग्वालियर** (५२), **इन्दौर** (५३) और **भूपाल** (५४) हैं जो इन्हीं नामों की रियासतों की राजधानियाँ हैं। **श्रीनगर** (५५) कश्मीर की राजधानी है जो झेलम के किनारे कश्मीर की सुन्दर घाटी में स्थित है।

प्रश्नावली

१—कलकत्ता और बम्बई दोनें के व्यापार को रेलों ने उन्नत किया है परन्तु कलकत्ते की अपेक्षा बम्बई को रेलों से अधिक सहायता क्यों मिली है ?

२—बम्बई की अपेक्षा करांची किन कारणों से बड़ा व्यापारी बन्दरगाह हो गया है ?

३—हिन्दुस्तान के (१) चार स्वास्थ्यकर पहाड़ी स्थानों, (२) चार छावनियों, (३) और चार रेलों के केन्द्रों के नाम बताओ और इनकी स्थिति का वर्णन करो ।

४—उन नगरों के नाम बताओ और स्थिति वर्णन करो जो प्राचीन समय में हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों के राजाओं की राजधानी थे। बताओ इन पुरानी राजधानियों में किस प्रकार की कारीगरियाँ प्रायः पाई जाती हैं और यह भी बताओ कि यह कारीगरियाँ इन स्थानों पर किस प्रकार पैदा हो गईं ।

५—निम्नलिखित नगरों की स्थिति वर्णन करो । और जहाँ तक सम्भव हो उनकी उन्नति के कारण बताओ:—

कटक, कानपुर, चटगाँव, अहमदाबाद, जबलपुर, मुल्तान, हैदराबाद, कोलेर, श्रीनगर ।

अभ्यास

१—क—पृष्ठ ५४ पर नक़शे को देखो और सूबे के क्रम से उन नगरों के नाम बताओ, जोकि निम्नलिखित संख्याओं से प्रकट होते हैं ।

१ से ५ तक, ६ से १२ तक, १३ से २१ तक, २२, २३ से २८ तक, २९, ३०, ३१ से ३४ तक, ३५, ३६, ३७ से ४४ तक ।

ख—उन नगरों के नाम बताओ जिन पर ४५ से ५५ तक संख्या के नंबर पड़े हैं ?

२—हिन्दुस्तान के दिये हुए ख़ाके पर निम्नलिखित नगरों की स्थिति चिह्नित करो और नाम भी लिखो:—

(१) हबड़ा (२) चटगांव (३) शिलांग (४) बाँकीपुर (५) कटक (६) कानपुर (७) लखनऊ (८) देहली (९) शिमला (१०) क्वेटा (११) अहमदाबाद (१२) नागपुर (१३) त्रिचनापली (१४) कोचीन (१५) बंगलौर (१६) आगरा।

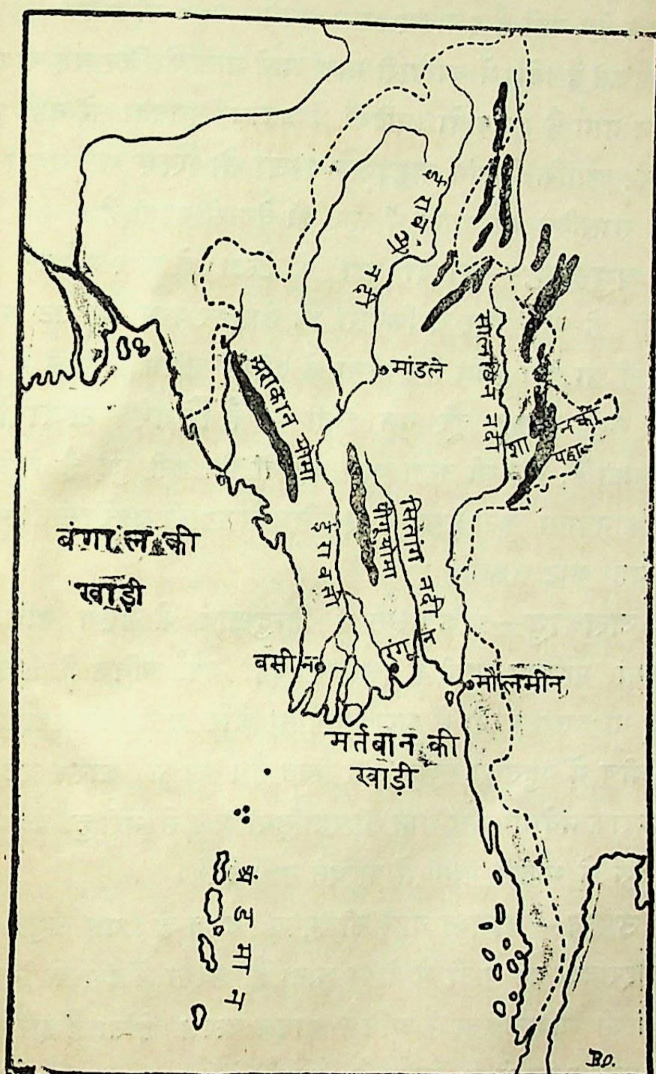
नवाँ अध्याय

बरमा

बरमा हिन्दुस्तान के राज्य का एक सूबा है। अन्य सूबों की भाँति यह भी वाइसराय के अधीन है। इसको हिमालय पर्वत की पूर्वी शाखाओं और बङ्गाल उपसागर ने हिन्दुस्तान से अलग कर दिया है। यही कारण है कि यहाँ के निवासी हिन्दुस्तान के निवासियों से जाति, भाषा, धर्म और व्यवहार में भिन्न हैं।

प्राकृतिक दशा—बरमा उन पहाड़ियों की श्रेणियों से बना हुआ है जो प्रायः उत्तर-दक्षिण चली गई हैं और जो एक दूसरे से लम्बी तथा संकीर्ण घाटियों से अलग हो गई हैं। **अराकानयोमा** मुख्य श्रेणी है। यह पहाड़ पटकई श्रेणी का एक बढ़ा हुआ भाग है। इसके समानान्तर दक्षिण में एक नीची पहाड़ियों की श्रेणी, जिसको **पेगूयोमा** कहते हैं, फैली हुई है। बरमा के उत्तर और पूर्व में बहुतसे पहाड़ और पठार हैं जो **शान की पहाड़ियों** तक संकीर्ण होते चले गये हैं।

बरमा में पहाड़ों की श्रेणियों की दिशा से यह बात प्रकट है कि उसकी नदियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। यहाँ की बड़ी-बड़ी नदियाँ **इरावदी, सितांग और सालविन** हैं जिनमें इरावदी सबसे प्रसिद्ध है। बर्फ़ के पिघलने से यह नदी बनती है, इसलिए यह गहरी है। इस नदी के नीचे के भाग में



बरमा ।

अधिक वेग नहीं है इसलिए इसमें लगभग ८०० मील तक जहाज़ जा सकते हैं। देश में व्यापारी माल आने-जाने के लिए यह सबसे प्रधान मार्ग है। शेष दो नदियों में जहाज़ सुगमता से नहीं जा सकते, क्योंकि सितांग **जहाज़ी यात्रा के लिए** कम गहरी है और सालविन कई स्थानों में बहुत ही वेग से बहती है।

समुद्रतट—इरावदी नदी के डेल्टा के और मर्तवान की खाड़ी के चारों ओर के किनारों को छोड़कर बरमा का तट कड़ी चट्टानों का बना हुआ है। बरमा के दक्षिण-पश्चिम के कोने में जो भूमि समुद्र में कुछ दूर तक चली गई है **निगरेस अन्तरीप** कहलाती है; यह भी उन्हीं कड़ी चट्टानों की बनी हुई है जिनसे अराकानयोमा बना हुआ है, इसलिए समुद्र की लहरें इस किनारे को नहीं काट सकतीं।

जलवायु—चूँकि बरमा में हिन्दुस्तान के सदृश दक्षिण-पश्चिमी मानसून आती है इसलिए यहाँ वर्षा अधिक होती है। फिर भी उत्तरी बरमा में अराकानयोमा और शान की पहाड़ियों के बीच में बहुतसा सूखा देश स्थित है। इसका कारण यह है कि अराकानयोमा और शान की पहाड़ियाँ जल से भरी हुई हवाओं को देश के भीतरी भागों में पहुँचने नहीं देतीं।

उपज—**चावल** यहाँ की मुख्य उपज है। यह समुद्र-तट और इरावदी की घाटी में बोया जाता है। बरमा में देश के निवासियों की आवश्यकता से अधिक चावल उत्पन्न होता है इसलिए यह बाहर बहुत भेजा जाता है। जंगलों में उत्तम लकड़ी, विशेष कर **सागौन**, उत्पन्न होती है। उत्तरी बरमा के सूखे मध्य भागों

में रुई, तम्बाकू, ज्वार, बाजरा और दालें बोई जाती हैं। इरावदी नदी की घाटी में **मिट्टी का तेल** बहुत निकलता है जिसमें बहुतसा बाहर भेजा जाता है। उत्तर की ओर **चुन्नी** की खानें हैं। तटीय प्रान्तों में और मर्तबान की खाड़ी के दक्षिण में टीन खानों से निकाला जाता है।

प्रसिद्ध नगर—रंगून सूबे की राजधानी है जो इरावदी नदी के डेल्टा पर प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसकी अच्छी स्थिति तथा उत्तम बन्दरगाह होने के कारण इरावदी की वादी की उपज यहीं से समुद्री मार्ग-द्वारा बाहर भेजी जाती है। चावल साफ़ करने के लिए और सागौन के तख़्ते चीरने के लिए, जो बाहर भेजे जाते हैं, यहाँ बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। इसके अतिरिक्त दो और प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं, जिनमें से एक **बेसीन** है जो इरावदी नदी की पश्चिमी शाखा पर स्थित है और दूसरा **मौलमीन** है जो सालविन नदी के मुहाने पर है। इन दोनों बन्दरगाहों से चावल बाहर भेजा जाता है। मौलमीन से सागौन की बहुतसी लकड़ी, जो पहाड़ के जंगलों से सालविन नदी में बहा कर लाई जाती है, भेजी जाती है। **मांडले**, जो इस देश का भीतरी नगर है, उत्तरी बरमा के अन्तिम राजा की राजधानी था। यह इरावदी के किनारे उस स्थान पर स्थित है जहाँ पर इरावदी और सितांग की घाटियाँ मिलती हैं। इसलिए यह व्यापार और रेलों का बहुत बड़ा केन्द्र है।

प्रश्नावली

१—इरावदी नदी सालविन नदी से अधिक प्रसिद्ध क्यों है ?

२—बरमा के किस भाग में वर्षा सबसे अधिक होती है और किस भाग में सबसे कम ? और क्यों ?

३—बरमा के किन-किन भागों में निम्नलिखित वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं:—

चावल, तम्बाकू, सागौन, ज्वार और बाजरा ।

४—बरमा में कौन-कौनसी खनिज वस्तुयें मिलती हैं ? बताओ यह कहाँ-कहाँ पाई जाती हैं ।

५—निम्नलिखित नगरों की उन्नति का कारण बताओ:—

रंगून, मौलमीन, मांडले

अभ्यास

बरमा के दिये हुए ख़ाके पर निम्नलिखित की स्थिति दिखाओ और नाम भी लिखो:—

अराकानयोमा, पीगूयेमा, शान की पहाड़ियाँ । इरावदी, सालविन, सितांग । रंगून, बसीन, मांडले, मौलमीन । निगरेस अंतरीप, मर्तबान की खाड़ी ।

